लखनऊ
मंगलवार, 22 जुलाई, 2025
वर्ष : 11 । अंक: 13
मूल्य : 1 रुपये
पृष्ठ : 8
UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक आर्यावर्त क्रांति

गहरी नदी का जल प्रवाह शांत व गंभीर होता है। - शेक्सपीयर

TODAY WEATHER

DAY 37° Hi

NIGHT 26° Low

सदन चलाना सबकी जिम्मेदारी.... अखिलेश यादव पर भड़क गए लोकसभा स्पीकर ओम बिरला

नई दिल्ली, एजेंसी। संसद के मॉनसून सत्र का आगाज हो चुका है। जैसी उम्मीद की जा रही थी सत्र शुरू होते ही लोकसभा में जमकर हंगामा देखने को मिला। सुबह 11 बजे जैसे ही राष्ट्रगान के बाद सदन की कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्ष ने शोर-शराबा शुरू कर दिया। इस दौरान लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि सदन चलाना सभी की जिम्मेदारी है। स्पीकर की अपील के बावजूद विपक्षी सांसदों की नारेबाजी जारी रही। इस दौरान स्पीकर बिरला ने सपा मुखिया अखिलेश यादव को फटकार भी लगाई।

लोकसभा अध्यक्ष की अपील का भी नहीं दिखा असर

लोकसभा अध्यक्ष लगातार सांसदों को शांत रहने की अपील करते रहे। उनकी कोशिश यही थी कि सदन की कार्यवाही सुचारू रूप से चल सके। हालांकि, विपक्षी सांसदों का हंगामा नहीं थमा। काफी कोशिश के बाद सदन की कार्यवाही 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। इस हंगामे के दौरान पीएम मोदी भी सदन में मौजूद रहे।

सदन में हंगामा तो ओम बिरला की सांसदों से अपील

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि हम देश की जनता की भावनाओं के अनुरूप में उनकी भावनाओं को अभिव्यक्त करें। देश में जो घटनाएं घटीं उस मिथक को तोड़ना ही चाहिए। प्रश्नकाल में जो भी विषय होता है उसे प्रश्नकाल के लिए आप नोटिस दीजिए। इस दौरान स्पीकर समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव पर कुछ नाराज भी हुए।

अखिलेश पर क्यों भड़के लोकसभा स्पीकर

ओम बिरला ने दो टूक कहा कि अखिलेश जी आप सभी सदस्यों से कहिए तख्तियां लेकर न आएं। मैं आपको प्रश्नकाल के बाद सभी विषयों पर चर्चा की अनुमति दूंगा। बावजूद इसके विपक्षी सांसद शांत नहीं हुए। इस पर स्पीकर बिरला ने कहा कि ये तरीका उचित नहीं है, सदन के पहले दिन सदन चले अच्छी चर्चा हो।

पीएम मोदी ने सत्र को लेकर की थी ये अपील

वहीं संसद का मानसून सत्र शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विपक्ष से खास अपील की। उन्होंने संसद परिसर में कहा कि सभी दलों का अलग-अलग एजेंडा है और दल हित में उनके मत भले ही न मिलें, लेकिन देश हित में मन जरूर मिलने चाहिए। प्रधानमंत्री ने मॉनसून सत्र को 'विजयोत्सव' बताया। उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर के रूप में पूरी दुनिया ने भारत की सैन्य शक्ति देखी और आतंकवाद के आका बेनकाब हुए।

महज 20 मिनट चली लोकसभा की कार्रवाई

नई दिल्ली, एजेंसी। संसद का मॉनसून सत्र आज से शुरू हो चुका है। पीएम मोदी ने मीडिया को मॉनसून सत्र से पहले संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जिक्र भी किया। इस बार का सत्र की शुरुआत होते ही हंगामा होने लगा।

लोकसभा में प्रश्नकाल शुरू होते ही विपक्षी सांसदों ने हंगामा शुरू कर दिया। स्पीकर ओम बिरला ने विपक्षी सांसदों को समझाने की कोशिश की। समाजवादी पार्टी के सांसदों के अपने आसन के पास खड़े होने पर बिरला ने सपा सांसद अखिलेश यादव से अपील की कि वे अपने सांसदों को समझाएं। स्पीकर ने कहा, 'अखिलेश जी, इनको बिठाइए..' बिरला ने विपक्षी सांसदों के शोर-शराबे पर कहा कि सरकार प्रश्नकाल के बाद ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के लिए तैयार है। सरकार हर सवाल का जवाब देगी।

हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई है। विपक्ष लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा की मांग के लिए हंगामा कर रहा है, जिस पर स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि आप जिस मुद्दे पर चर्चा चाहते हैं वो प्रश्नकाल के बाद होगा। नियमों के हिसाब से ही चर्चा होगी।

संक्षेप

उड़ान भरते ही विमान में आई तकनीकी खराबी, 40 मिनट तक आसमान में ही मंडराता रहा; करवानी पड़ी आपातकालीन लैंडिंग

हैदराबाद। आंध्र प्रदेश के तिरुपति से तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद जा रही इंडिगो एयरलाइंस की एक फ्लाइट में तकनीकी खराबी आ गई। उड़ान भरने के कुछ समय बाद विमान को 40 मिनट तक आसमान में मंडराना पड़ा, जिसके बाद तिरुपति एयरपोर्ट पर आपातकालीन लैंडिंग कराई गई। रविवार शाम इंडिगो की एयरबस ्र321इद्गश फ्लाइट ने तिरुपति एयरपोर्ट से शाम 7:42 बजे उड़ान भरी थी। फ्लाइट ट्रैकिंग वेबसाइट के अनुसार, विमान उड़ान भरने के बाद तिरुपति के वेंकटनगरी क्षेत्र तक पहुंचा, लेकिन तकनीकी गड़बड़ी के कारण वहां से यू-टर्न लेकर लगभग 40 मिनट तक हवा में चक्कर लगाता रहा। अंततः शाम 8:34 बजे विमान की सुरक्षित लैंडिंग तिरुपति एयरपोर्ट पर कराई गई। घटना के दौरान विमान में सवार यात्री काफी घबरा गए थे। हालांकि, पायलट की सूझबूझ और ग्राउंड कंट्रोल के सहयोग से सभी यात्रियों को सुरक्षित उतार लिया गया। वहीं दूसरी ओर, इंडिगो की आधिकारिक वेबसाइट पर यह जानकारी दी गई कि फ्लाइट ने शाम 7:20 बजे उड़ान भरी और 8:30 बजे हैदराबाद पहुंची, जो वास्तविक घटनाक्रम से मेल नहीं खाती। इसके अलावा, तिरुपति से हैदराबाद के लिए दिन की अंतिम फ्लाइट को भी रद्द कर दिया गया। फ्लाइट रद्द होने और जानकारी की कमी के चलते यात्रियों ने एयरलाइन के प्रति नाराजगी जाहिर की। सोशल मीडिया पर कई वीडियो सामने आए हैं, जिनमें यात्री इंडिगो स्टाफ से बहस करते नजर आ रहे हैं। फिलहाल इंडिगो की ओर से इस घटना पर कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है।

इंसानियत शर्मसार : महिला को डायन बताकर निर्वस्त्र कर पीटा, सिर मुंडवाया; शरीर पर ब्लेड से किए वार

हजारीबाग। झारखंड के हजारीबाग जिले में डायन बताकर एक विधवा महिला के साथ दरिंदगी की शर्मनाक घटना सामने आई है। आरोपियों ने महिला के घर में घुसकर उसे निर्वस्त्र कर पीटा, उसके शरीर के कई हिस्सों को ब्लेड से काटकर खून निकाला और तांत्रिक अनुष्ठान किया। इसके बाद उसे जबरन बिहार के गया ले जाकर उसका सिर मुंडवा दिया गया। डायन मुक्ति के नाम पर महिला और उसके बेटे से 30 हजार रुपये भी वसूले गए। घटना हजारीबाग के बरही थाना क्षेत्र के जरहिया गांव की है। पीड़िता ने रविवार रात बरही थाना पहुंचकर आपबीती सुनाई, जिसके बाद पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। महिला ने बताया कि शुक्रवार शाम गांव के सात लोग उसके घर पहुंचे और डायन होने का आरोप लगाते हुए उसे घसीटकर बाहर निकाला। उसके कपड़े उतार दिए गए। फिर उसे पीटा गया और शरीर पर ब्लेड से जख्म कर खून निकाला गया। खून का इस्तेमाल कर तांत्रिक अनुष्ठान किया गया। इसके बाद आरोपी उसे जबरन घर से उठाकर ले गए। बरही से गया जिले के प्रेतशिला ले जाकर उसका सिर मुंडवा दिया। वहां भी मारपीट की गई। आरोपी बार-बार कहते रहे कि उसे 'डायन-बिसाही से मुक्ति दिलाई जा रही है।

'लोकतंत्र लगातार कटुता बर्दाशत नहीं कर सकता', उपराष्ट्रपति बोले- राजनीतिक तनाव घटाने की जरूर

नई दिल्ली, एजेंसी। राज्यसभा सभापति और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को कहा कि एक फलता-फूलता लोकतंत्र निरंतर कटुता के हालात बर्दाश्त नहीं कर सकता। उपराष्ट्रपति ने राजनीतिक पार्टियों से एक दूसरे पर सार्वजनिक तौर पर निजी हमले न करने की अपील की। उन्होंने जोर देकर कहा कि बातचीत और चर्चा ही संघर्ष के बिना आगे बढ़ने का रास्ता हैं। उन्होंने राजनीतिक पार्टियों से तनाव घटाने और विकास की राजनीति करने की अपील की।

जगदीप धनखड़ ने सोमवार को संसद के मानसून सत्र की शुरुआत में राज्यसभा में अपने संबोधन के दौरान ये बातें कही। उपराष्ट्रपति का यह बयान इस मायने में भी अहम है क्योंकि विपक्ष ऑपरेशन सिंदूर, पहलगाम आतंकी हमले और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बयान आदि जैसे मुद्दों पर सरकार से जवाब मांग रहा है और सदन में इन मुद्दों पर चर्चा की मांग कर रहा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि एक फलता-फूलता लोकतंत्र लगातार कटुता बर्दाश्त नहीं कर सकता। राजनीतिक तनाव घटना चाहिए। टकराव राजनीति का सार नहीं है। राजनीतिक दल अलग-अलग तरीकों से समान लक्ष्य पाने के प्रयास कर सकती हैं, लेकिन कोई भी राष्ट्र के हितों का विरोध नहीं करता।'

सरकार के लोग बोल सकते हैं, तो विपक्ष केक्यों नहीं?, प्रियंका गांधी ने किया समर्थन : राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी। संसद के मानसून सत्र के दौरान सोमवार को लोकसभा में विपक्ष और सरकार के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने लोकसभा में अपनी बात रखने की अनुमति न मिलने को लेकर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि जब सरकार की ओर से रक्षा मंत्री और अन्य मंत्री बोल सकते हैं, तो विपक्ष के नेता को भी बोलने का अधिकार मिलना चाहिए। राहुल गांधी ने सदन में कहा, सवाल यह है कि सरकार के लोग सदन में बोल सकते हैं, लेकिन विपक्ष के किसी नेता को बोलने नहीं दिया जाता। मैं विपक्ष का नेता हूं, मुझे कभी बोलने ही नहीं दिया जाता। यह मेरा हक है। परंपरा कहती है कि अगर सरकार की ओर से लोग बोल सकते हैं, तो हमें भी बोलने की जगह मिलनी चाहिए।

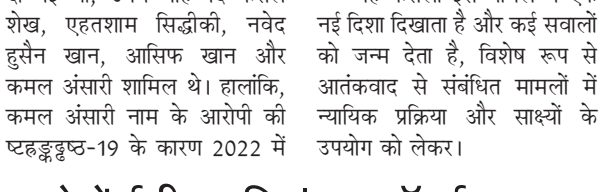

'ईडी ने लांघी सारी सीमाएं, तय करनी होंगी गाइडलाइंस'

वकीलों को समन भेजने पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय की कार्यशैली को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक मामले की सुनवाई के दौरान बेहद सख्त और अहम टिप्पणी की है। अदालत ने कहा कि ईडी सभी सीमाएं लांघ रही है और अब उसके लिए कुछ दिशानिर्देश (गाइडलाइंस) तय करने की जरूरत है। यह मामला कुछ वकीलों को ईडी द्वारा जारी किए गए समन से जुड़ा था। इन वकीलों ने आर्थिक अपराधों के आरोपियों को कानूनी सलाह दी थी, जिसके चलते एजेंसी ने उन्हें भी समन भेज दिया था। इसी मामले पर जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने स्वतः संज्ञान लेते हुए अपनी नाराजगी जाहिर की।

बेंच ने टिप्पणी करते हुए कहा, ईडी ने सीमा पार कर दी है। आप वकीलों को इस तरह समन नहीं भेज सकते क्योंकि उन्होंने आरोपी को सलाह दी है। अदालत ने इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त की कि इस तरह की कार्रवाई से कानून के पेशे की स्वतंत्रता सीधे तौर पर प्रभावित होगी। कोर्ट ने कहा कि अगर ऐसा होता रहा तो कोई भी वकील अपने मुवक्किल को निष्पक्ष सलाह देने से डरेगा। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जांच एजेंसी की कार्यप्रणाली के लिए नियम निर्धारित होने चाहिए, ताकि शक्तियों का दुरुपयोग न हो। अदालत का यह रुख ईडी की जांच प्रक्रियाओं पर भविष्य में बड़ा असर डाल सकता है।

मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट : हाईकोर्ट का बड़ा फैसला, सभी 12 आरोपी बरी

मुंबई, एजेंसी। 2006 के मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट मामले में सोमवार को बॉम्बे हाई कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाते हुए सभी 11 दोषियों को निर्दोष करार दिया और उन्हें बरी कर दिया है। यह फैसला जस्टिस अनिल किलोर और जस्टिस एस. जी. चांडक की खंडपीठ ने सुनाया। इस मामले में कुल 12 आरोपियों को पहले निचली अदालत ने दोषी ठहराया था, जिनमें से 5 को फांसी और 7 को उम्रकैद की सजा दी गई थी। हालांकि, हाई कोर्ट ने सुनवाई के दौरान 11 दोषियों को बरी कर दिया, जबकि एक आरोपी की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी।

सूत्रों के अनुसार, इस साल जनवरी में इस प्रकरण की अंतिम सुनवाई पूरी हुई थी, जिसके बाद फैसला सुरक्षित रखा गया था। दोषियों ने येरवडा, नाशिक, अमरावती और नागपूर जेलों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कोर्ट में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी।

2006 में हुए इस भीषण बम धमाके में मुंबई की लोकल ट्रेनों के सात स्थानों पर विस्फोट हुए थे, जिसमें 189 लोगों की जान गई थी और 824 लोग घायल हुए थे। इस मामले में 2015 में स्पेशल कोर्ट ने कुल 12 आरोपियों को दोषी करार दिया था, जिनमें से 5 को फांसी और 7 को उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी। जिन लोगों को फांसी की सजा दी गई थी, उनमें मोहम्मद फैसल शेख, एहतशाम सिद्धीकी, नवेद हुसैन खान, आसिफ खान और कमल अंसारी शामिल थे। हालांकि, कमल अंसारी नाम के आरोपी की ष्टह्रङ्कढ्ढष्ठ-19 के कारण 2022 में जेल में ही मृत्यु हो गई थी।

बचाव पक्ष ने आरोप लगाया था कि रूष्टह्रष्ट्र अधिनियम के तहत दर्ज की गई पाक्षिकीय बातों 'जबरदस्ती' और 'टॉर्चर' से प्राप्त की गईं, और इसलिए उन्हें अवैध मानते हुए खारिज किया जाना चाहिए। दूसरी ओर, राज्य ने यह साबित करने की कोशिश की थी कि यह मामला 'रेयर ऑफ द रेयरेस्ट' (किसी भी तरह से गंभीर और असाधारण) है, और दोषियों को सजा देना न्यायोचित है।

यह फैसला इस मामले में एक नई दिशा दिखाता है और कई सवालों को जन्म देता है, विशेष रूप से आतंकवाद से संबंधित मामलों में न्यायिक प्रक्रिया और साक्ष्यों के उपयोग को लेकर।

चमत्कार! दांतों के इलाज से 20 साल बाद लौटी महिला की सुनने की शक्ति

सूरत। अब तक हम यही जानते आए हैं कि नाक, कान और गले से जुड़ी समस्याओं का इलाज ईएनटी विशेषज्ञ करते हैं। लेकिन गुजरात के सूरत से एक ऐसा हैरान करने वाला मामला सामने आया है, जो शायद इस धारणा को बदल दे। यहां एक 63 वर्षीय महिला ने दांतों का इलाज करवाया और उनकी दशकों पुरानी सुनने की समस्या दूर हो गई। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था, क्योंकि महंगे से महंगे हियरिंग एड भी उनके लिए बेअसर साबित हो चुके थे।

सूरत जिले के कोसंबा की रहने वाली 63 वर्षीय जैबुन्निसा एम पिछले करीब 20 सालों से बहरीपन का दर्द झेल रही थीं। पिछले 10 साल उनके लिए और भी मुश्किल भरे थे, जब उनकी सुनने की क्षमता लगभग पूरी तरह खत्म हो गई थी। इस वजह से उन्होंने सामाजिक कार्यक्रमों और शादियों में जाना भी छोड़ दिया था। पड़ोसियों को लगता था कि विदेश में बसे बच्चों के कारण वह घमंडी हो गई हैं, लेकिन असलियत यह थी कि उन्हें कुछ सुनाई ही नहीं देता था।

लगातार बढ़ती परेशानी के बाद डॉक्टरों ने उन्हें कॉक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की सलाह दी, जो इसी साल जुलाई में होनी थी। सर्जरी के लिए उनकी रेडियोलॉजिस्ट बेटी दुबई से सूरत आ चुकी थी और डेंटिस्ट बेटी अमेरिका से आने की तैयारी में थी। लेकिन सर्जरी से ठीक पहले कुछ ऐसा हुआ, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

जैबुन्निसा ने बताया, मैं घर पर बैठी थी कि अचानक मुझे आवाजें सुनाई देने लगीं। मैं दौड़कर अपने पति के पास गई और फिर पड़ोसी के घर जाकर इस बात की पुष्टि की। यह अविश्वसनीय बदलाव उनके फुल-माउथ डेंटल रिकंस्ट्रक्शन और नर्व डीकंप्रेसन जैसी प्रक्रियाओं के बाद हुआ। इम्प्लांट विशेषज्ञ डॉ. ऋषि भट्ट के अनुसार, दांतों के इलाज के बाद उनकी सुनने की क्षमता में सुधार हुआ। यह संभव है कि इलाज के दौरान कान से जुड़ी कोई नस खुल गई हो, जिसका यह सकारात्मक असर हुआ। इस चमत्कारिक सुधार को देखते हुए जैबुन्निसा के ईएनटी डॉक्टरों ने कॉक्लियर इम्प्लांट की योजना को तत्काल रोक दिया। ईएनटी सर्जन डॉ. अशरफ मास्टर ने कहा, उनकी ऑडियोमेट्री रिपोर्ट में सुनने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार दिखा है। अब जैबुन्निसा की दुनिया फिर से आवाजों से गुलजार हो गई है। जो महिला पहले हर फोन कॉल के लिए दूसरों पर निर्भर थी, वह अब फिर से खुलकर बातें कर रही हैं और सामाजिक जीवन में लौटने के लिए उत्साहित हैं। उनकी बेटी तहजीब ने खुशी जाहिर करते हुए कहा, पहले जब मैं कॉल करती थी, तो सिर्फ वही बोलती थीं और हम सुनते थे। लेकिन अब वह पहले की तरह हमारी बातें भी सुन सकती हैं।

हरियाणा लैंड डील मामले में ईडी का शिकंजा, रॉबर्ट वाड्रा पर 58 करोड़ की अवैध कमाई का आरोप ; चार्जशीट दाखिल

नई दिल्ली, एजेंसी। हरियाणा के बहुचर्चित गुरुग्राम लैंड डील मामले में प्रवर्तन निदेशालय (श्वष्ठ) ने रॉबर्ट वाड्रा पर अपना शिकंजा कस दिया है। एजेंसी ने पिछले सप्ताह वाड्रा समेत 11 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल करते हुए आरोप लगाया है कि डीएलएफ प्रोजेक्ट की लैंड डील में हुई अनियमितताओं से रॉबर्ट वाड्रा को 58 करोड़ रुपये की अवैध कमाई हुई।

ईडी के मुताबिक, यह पूरा मामला गुरुग्राम के शिकोहपुर गांव (अब सेक्टर 83) की 3.5 एकड़ जमीन से जुड़ा है, जिसे पहले रॉबर्ट वाड्रा की कंपनी स्काईलाइट हॉस्पिटैलिटी प्राइवेट लिमिटेड ने महज 7.5 करोड़ रुपये में खरीदा था। बाद में, कथित तौर पर जमीन का लैंड यूज बदलवाने के बाद इसी जमीन को 2012 में डीएलएफ को 58 करोड़ रुपये में बेच दिया गया।

यह मामला सबसे पहले तब सुर्खियों में आया था, जब हरियाणा के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी अशोक खेमका ने इस जमीन के म्यूटेशन (दाखिल-खारिज) को रद्द कर दिया था। ईडी ने अपनी चार्जशीट में दावा किया है कि इस सौदे के लिए 53 करोड़ रुपये का भुगतान स्काईलाइट हॉस्पिटैलिटी के खाते में किया गया, जबकि 5 करोड़ रुपये ब्लू ब्रीज ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी को दिए गए। एजेंसी का आरोप है कि इस 58 करोड़ रुपये की रकम का इस्तेमाल वाड्रा ने अन्य अचल संपत्तियों की खरीद, निवेश और अपने लोन चुकाने के लिए किया।

ईडी का यह भी कहना है कि वाड्रा की कंपनी को कमर्शियल लाइसेंस देने की प्रक्रिया में भी गंभीर गड़बड़ियां की गई थीं। इस चार्जशीट को दाखिल करने से पहले एजेंसी रॉबर्ट वाड्रा से कई दौर की पूछताछ कर चुकी है।

'पुलिस का दिमाग ठीक कर दूंगा', मेरठ में ऐसा क्यों बोले राज्यसभा सदस्य डा. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए शोभित विश्वविद्यालय में बनाए हेलिपैड तक पहुंचने को लेकर रविवार को राज्यसभा सदस्य डा. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी की पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों से जमकर तकरार हुई, जिसका वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो गया।

राज्यसभा सदस्य डा. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी की गाड़ी को विश्वविद्यालय की ओर जाने वाले रास्ते पर दुल्हैड़ा चौकी के पास रोका गया तो भड़क गए। उन्होंने कहा ₹पुलिस का दिमाग ठीक कर दूंगा₹। बाद में उन्हें भी प्रशासन ने दूसरे मार्ग से हेलीपैड तक पहुंचाया। राज्यमंत्री डा. सोमेन्द्र तोमर दूसरे रास्ते से हेलिपैड जाने के लिए तैयार हो गए। हालांकि प्रोटोकाल के तहत एक कार उनके साथ जाने दी गई।

इस मामले में राज्यसभा सदस्य डा. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी ने कहा कि सीएम के आगमन के दौरान मेरी गाड़ी को दुल्हेड़ा चौकी के पास रोका गया। पुलिस को प्रोटोकाल समझाया गया। इसके बाद हेलिपैड स्थल तक गाड़ी से पहुंचा।

अन्य जनप्रतिनिधि गए अधिकारियों की कार से

कैंट विधायक अमित अग्रवाल, बिजनौर के रालोद सांसद चंदन चौहान, रालोद विधायक गुलाम मोहम्मद, महापौर हरिकांत अहलूवालिया, जिलाध्यक्ष शिव कुमार राणा, जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन विमल शर्मा, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष मनिंदरपाल सिंह, सुनील भराला व संजीव सिक्का भी आए तो उन्हें सीडीओ समेत अन्य तीन की गाड़ियों से विश्वविद्यालय गेट तक पहुंचाया गया। इस दौरान हाईवे पर जाम लग गया।

एसपी ट्रैफिक राघवेंद्र मिश्र ने कहा कि शुरुआत में डा. लक्ष्मीकांत बाजपेई आए, वह अपनी गाड़ी से विश्वविद्यालय गेट पर पहुंचे। मुख्यमंत्री के आने की सूचना के बाद सीएम सुरक्षा अधिकारियों ने बाकी गाड़ियों को हाईवे पर रोकने को कहा। अन्य जनप्रतिनिधियों की गाड़ी को दुल्हेड़ा पुलिस चौकी के पास रोककर उन्हें सम्मान से सीडीओ की गाड़ी से विश्वविद्यालय गेट तक लाया गया।

कछुआ गति से चले वाहन, लगा जाम

जागरण संवाददाता, मेरठ : रविवार को दिल्ली-दून हाईवे पर यातायात पुलिस व्यवस्था नहीं बना सकी। मुख्यमंत्री के जाने के बाद पांच किमी लंबा जाम लग गया। शाम के समय झांकी देखने वाले लोगों के वाहन सड़क पर खड़े होने से समस्या हो रही है। एसपी सिटी ने पुलिस बल लगाकर उक्त वाहनों को हटाया। तब जाकर रात आठ बजे यातायात सामान्य हो सका। इसके अलावा बागपत फ्लाईओवर से लेकर आरएएफ कट तक भी जाम के हालत बने रहे।

जिम्मेदार सोते रहे, सड़क को खुद गड्ढामुक्त करने में जुटे बुलंदशहर के 'दशरथ मांझी'

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। पवित्र सावन के दूसरे सोमवार को गनपत सहाय महाविद्यालय के पयागीपुर स्थित मुख्य परिसर में पूजन अर्चन के पश्चात नए सत्र 2025-26 का शुभारंभ किया गया। जिसमें मुख्य यजमान के रूप में महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ ओम प्रकाश पाण्डेय 'बजरंगी' और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अंग्रेज सिंह 'राणा' सम्मिलित हुए। महाविद्यालय के प्रबंधक के साथ प्रबंध समिति के सदस्य सौरभ पाण्डेय 'मुनी' और आशीष पाण्डेय 'सनी' पूरे परिवार के साथ पूजा में सम्मिलित हुए जिसमें मंत्रोच्चार और पूरे विधि विधान के साथ हवन पूजन कर नए सत्र का शुभारंभ हुआ। महाविद्यालय के प्रबंधक ने कहा कि जहां एक तरफ शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है और निरंतर शिक्षा के मंदिरों का स्तर गिर रहा है वहां आज भी गनपत सहाय महाविद्यालय समाज के सभी वर्गों के छात्र छात्राओं को उत्कृष्ट शिक्षा और सुविधाएं प्रदान कर रहा है। गनपत सहाय महाविद्यालय सुल्तानपुर का पहला महाविद्यालय है जिसकी स्थापना 1967 में हुई और आज भी छात्र हित में निरंतर प्रयासरत है। महाविद्यालय के प्राचार्य ने कहा कि गनपत सहाय महाविद्यालय विगत 58 वर्षों से इस क्षेत्र का अग्रणी महाविद्यालय है जहां 10000 से अधिक छात्र छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। महाविद्यालय में उच्च स्तर के शिक्षण कक्ष, उत्कृष्ट लैब, पुस्तकालय, वाचनालय, जिम, हॉस्टल, खेल मैदान आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं। महाविद्यालय में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल- कूद, राष्ट्रीय कैडेट कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना आदि सुविधाएं भी उपलब्ध है।

काशी विश्वनाथ धाम में पुलिसकर्मी ने नेमी दर्शनार्थी को बेल्ट से पीटा, बीच-बचाव करने पर भी करता रहा गाली-गलौज

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। उच्चाधिकारियों के लाख समझाने-बुझाने और अच्छे आचरण के लिए प्रेरित करने के बाद भी कुछ पुलिसकर्मी अपनी आदतों से बाज नहीं आ रहे और दर्शनार्थियों समेत आमजन के साथ उनका दुर्व्यवहार आए दिन सामने आ रहा है।

रविवार भोर श्रीकाशी विश्वनाथ धाम में एक पुलिसकर्मी ने संवेदनहीनता की हद पार कर दी। एक नेमी दर्शनार्थी को पकड़ कर ले गया और भद्दी-भद्दी गालियां देते हुए मारने-पीटने लगा। आरोप है कि उसने अपनी बेल्ट निकालकर दर्शनार्थी की पिटाई की। इससे दर्शनार्थी के हाथ में फ्रैक्चर हो गया।

शहर निवासी शुभम मिश्रा बाबा के नेमी दर्शनार्थी हैं। वह प्रतिदिन भोर में बाबा का दर्शन करने मंदिर आते हैं। उन्होंने बताया कि शनिवार को जब नेमी दर्शनार्थियों का समूह बाबा का दर्शन-पूजन कर रहा था तभी राहुल कुमार नामक आरक्षी पांच-छह लोगों को अपने साथ लेकर पीछे से आया और नियम तोड़कर आगे पहुंचकर दर्शन कराने के लिए बढ़ने लगा।

इस पर शुभम ने नियमपूर्वक दर्शन करने का आग्रह किया। इस पर बहस हुई तो अन्य नेमी दर्शनार्थियों ने भी नियम विरुद्ध दर्शन कराने का विरोध किया।

रविवार भोर जब शुभम बाबा का दर्शन कर परिसर में सत्यनारायण मंदिर के पास पहुंचे तभी एक दिन पूर्व हुई बहस की खुन्नस लिए आरक्षी राहुल कुमार ने शुभम को पकड़ लिया और पीछे ले जाकर मारना शुरू कर दिया तथा गालियां देने लगा।

शोर सुनकर पहुंचे कुछ लोगों ने बीच-बचाव किया, लेकिन आरक्षी आक्रामक बना रहा। उसने बेल्ट निकालकर शुभम को मारना शुरू कर दिया। इससे शुभम का हाथ फ्रैक्चर हो गया। पीड़ित ने इस बात की शिकायत मंदिर प्रशासन से की।

मुख्य कार्यपालक अधिकारी विश्व भूषण मिश्र ने बताया कि सिपाही के खिलाफ शिकायत सही पाई गई। उसे उसके मूल जनपद वापस भेज दिया गया है तथा अनुशासनात्मक कार्यवाही के लिए विभागीय उच्चाधिकारियों को पत्र लिखा गया है।

अलीगढ़ रेलवे स्टेशन से अपहृत बच्ची संभल में मिली, एक माह में दूसरी वारदात ; सुरक्षा में आरपीएफ-जीआरपी फेल

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। रेलवे स्टेशन से शनिवार की रात अपहृत साढ़े तीन वर्ष की बच्ची को रविवार की देर रात संभल से बरामद कर लिया गया। दो युवकों को हिरासत में लिया है, जिनसे पूछताछ की जा रही है। इन्हें अलीगढ़ ले आया गया है। बच्ची के पिता करन प्रकाश ने इसकी पुष्टि की है, जबकि पुलिस ने अपहरण करने वालों के काफी निकट पहुंचने की बात कही है।

शहर के सासनी गेट क्षेत्र स्थित पला साहिबाबाद मुहल्ला के करन प्रकाश की पत्नी उर्मिला देवी का मायका दिल्ली के शहादरा में है। वह कई दिनों से मायके में रह रही हैं। करन को पत्नी के पास दिल्ली जाना था। इसके लिए वह शनिवार की रात करीब साढ़े दस बजे अपनी बेटी टीना को लेकर स्टेशन पर पहुंचे। टिकट लेकर प्लेटफार्म नंबर छह पर पहुंचे। वहीं उन्हें नींद आ गई। बच्ची खेल

रही थी। करीब एक बजे करन की नींद टूटी तो बच्ची गायब थी। घबराए करन ने काफी देर तक उसकी तलाश की। कुछ पता न लगने पर करन जीआरपी थाने गए और मुकदमा पंजीकृत कराया। अपहरण की जानकारी से रेलवे अधिकारियों के होश उड़ा दिए। दिल्ली से कानपुर तक की जीआरपी व आरपीएफ को जानकारी दी गई। स्टेशन व आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज के आधार पर आरपीएफ व जीआरपी की संयुक्त टीमों ने 24 घंटों में ही सफलता हासिल कर ली।

जीआरपी के प्रभारी निरीक्षक संदीप तोमर ने बताया कि सीसीटीवी कैमरों की फुटेज में एक युवक बच्ची को ले जाता दिखा। वह प्लेटफार्म के फुटओवर ब्रिज से मालगोदाम, रेलवे रोड की ओर जा रहा था। रात में ही आरपीएफ व जीआरपी की पांच टीमें बनाई गईं, जिन्होंने दिल्ली, बुलंदशहर, बदायूं और संभल में बच्ची की तलाश के लिए भेजा गया।

कितना सुरक्षित है रेलवे स्टेशन, बच्ची के अपहरण से खुली पोल

रात के समय रेलवे स्टेशन कितना सुरक्षित है, इसका अंदाजा बच्ची के अपहरण की वारदात से लगा सकते हैं। बच्ची भले रविवार की देर रात बरामद हो गई, मगर मात्र एक महीने में अपहरण की दूसरी वारदात होने से सुरक्षा पर सवाल उठने लगे हैं। सुरक्षा को आरपीएफ और जीआरपी ने कभी गंभीरता से नहीं लिया। करीब अस्सी जवान सुरक्षा के लिए तैनात हैं। दावा है कि रात के समय सभी सातों प्लेटफार्म पर जीआरपी व आरपीएफ के चार-चार जवान तैनात रहते हैं। इसके अलावा गेट पर अलग। आते-जाते किसी व्यक्ति को रोकने-टोकने तक की जरूरत महसूस नहीं की जा रही है। देर रात बच्ची को लेकर युवक प्लेट फार्म पर घूमता हुआ गया, मगर किसी ने उससे यह तक नहीं पूछा कि बच्ची की मां कहां है। एक महीने पहले भी बच्ची को इसी तरह एक युवक उठा लगा ले गया था।

रेलवे स्टेशन पर हैं सात प्लेटफार्म

रेलवे स्टेशन पर सात प्लेटफार्म हैं। 40 सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं। कैमरों की निगरानी के लिए कंट्रोल रूम में हर समय आरपीएफ के जवान तैनात रहते हैं। जीआरपी में 34 जवान हैं। आरपीएफ में 40 जवान है। अधिकारी अलग। पूरे रेलवे परिसर की सुरक्षा का दावा किया जाता है। तीन शिफ्टों में ड्यूटी लगना बताया जाता है। प्रत्येक प्लेटफार्म पर दो जीआरपी के कांस्टेबल और आरपीएफ के दो जवान तैनात होने की बात कही जाती है। सुबह, दोपहर व रात को 16 जवानों की संयुक्त टीम प्लेटफार्म पर चेकिंग करने का दावा है।

पूछताछ का नहीं है रिकॉर्ड

मगर, रात में स्टेशन पर आने-जाने वालों से पूछताछ का कोई रिकार्ड नहीं है। कोई भी जाए और प्लेटफार्मों पर घूम कर चला आए। शनिवार की रात बच्ची को ले जाते युवक को किसी ने नहीं रोका। जबकि 19 जून को इसी तरह एक बच्ची को युवक उठा ले गया था।

अत्याधुनिक संसाधनों से लैस धनपतगंज थाना में शुरू हुआ कामकाज

आर्यावर्त संवाददाता

बल्दीराय/सुल्तानपुर। बड़े इंतजार के बाद 21 जुलाई से आखिर धनपतगंज (अतरसुमा) थाने में कार्य सरकार प्रारम्भ हो गया। नए थाने में कार्य शुरू होने से क्षेत्रवासियों में ख़ुशी का माहौल है। पूर्व सांसद मेनका संजय गांधी ने अपने कार्यकाल में धनपतगंज में व्याप्त अराजकता व आपराधिक गतिविधियों के दृष्टिगत धनपतगंज चौकी को थाना बनाने का निर्णय लिया। क्षेत्रवासियों के मंशानुरूप शासन से 11.80करोड़ की लागत से निर्माण के लिए प्रीज कंस्ट्रक्शन को निर्माण कार्य मिला। 16 जनवरी 2023 को तत्कालीन पुलिस कप्तान सोमेन वर्मा व कोतवाल श्रीराम पांडेय द्वारा विधि विधान से पूजा कर थानानिर्माण का उद्घाटन हुआ। थाना भवन में आधुनिक संशाधनों/सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। 41 ग्राम सभाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी के साथ नया थाना अपनी जिम्मेदारी को मुस्तैद है। जिसका अब 21 जुलाई को कार्य सरकार शुरू हो गया है।

धनपतगंज थाना अस्तित्व में आने के बाद थाने पर प्रथम नियुक्ति इंस्पेक्टर मनोज शर्मा की हुई। जिन्होंने अपनी कार्य कुशलता और वाक पटुता से जहां क्षेत्र के अपराधियों पर निडरता पूर्वक अंकुश लगाकर अपराध पर अंकुश लगाया तो वहीं क्षेत्र की जनता के चहेते बन गए। आज भी उनकी कार्य क्षमता को लोग याद करते हैं। अब धनपतगंज के आधुनिक थाना के थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर प्रवीण यादव के नेतृत्व में नए थाने में कार्य शुरू कर दिया है। नए थाने में कार्य शुरू होने से क्षेत्र वासियों में खुशी की लहर है।

गंगा-यमुना का घटने लगा जलस्तर, समस्या फिर भी बरकरार, बाढ़ से घिरी बस्तियां, हो रहा पलायन

आर्यावर्त संवाददाता

प्रयागराज। चेतावनी बिंदु को पार कर खतरे के निशान के बेहद करीब पहुंचीं गंगा और यमुना नदियों में जलस्तर अब घटने लगा है। हालांकि बाढ़ प्रभावित इलाकों में अब भी कोई खास राहत नहीं मिली है। वहां समस्या जस की तस बनी हुई है। बाढ़ की चपेट में आए इलाकों की बस्तियां अब भी पानी से चौतरफा घिरी हुईं हैं। लोग अपने घरों को छोड़कर दूसरी जगह शरण लेने को मजबूर हैं। बीमारियां फैलने का खतरा अलग से मंडरा रहा है।

शहर समेत गंगापार और यमुनापार के तराई वाले इलाकों में बाढ़ कहर बरपा रही है। गंगा और यमुना चेतावनी बिंदु को पहले ही पार कर चुकी थीं। रविवार की सुबह दोनों नदियों का जलस्तर खतरे के बेहद करीब पहुंच गया था। गंगा का जलस्तर 83.06 मीटर तो यमुना 83.19 मीटर पर पहुंच गई थी।

हालांकि सोमवार को कुछ राहत मिली। सुबह यमुना का जलस्तर 82.59 मीटर दर्ज किया गया। जबकि, गंगा का जलस्तर फाफामऊ में 82.90, छतनाग में 81.90 मीटर पर आ गया। जलस्तर भले ही थोड़ा सा घटा हो, लेकिन सदर, करछना, मेजा, बारा, सोरांव समेत अन्य तहसीलों के बाढ़ प्रभावित इलाकों में समस्याएं अब भी बरकरार हैं।

बाढ़ के चलते लगभग 350 परिवारों को अपना घर छोड़ना पड़ा था। करीब 43 परिवारों ने अब भी राहत शिविरों में शरण ले रखी है। शेष परिवारों में किसी ने नाते रिश्तेदारों के यहां तो किसी ने किराए पर मकान ले कर रहने का इंतजाम किया है। नदियों में पानी घटने के साथ ही कटान भी शुरू हो गया है। फिलहाल, प्रशासन की नजरें बाढ़ प्रभावित इलाकों पर लगी हुईं हैं।

कांग्रेसियों ने मनाया राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे का जन्मदिन

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का जन्मदिन कांग्रेसियों ने धूमधाम से मनाया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा व शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने केक काटकर कार्यकर्ताओ व पदाधिकारियों का मुंह मीठा कराया और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की लंबी उम्र की कामना की। इस दौरान कांग्रेस जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके संघर्ष मेहनत निष्ठा व लगन की प्रसंशा की और कहा कि मल्लिकार्जुन खड़गे जी ने जब से कांग्रेस की कमान संभाली है तब से कांग्रेस का दिन प्रतिदिन जनाधार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि खड़गे जी कई दशकों से राजनीति में सक्रिय हैं और पार्टी में तथा अपने गृह राज्य और केंद्र की सरकारों में कई अहम पदों पर रहकर जनता व देश की सेवा की है, यहीं नहीं दो दशक बाद भी वे पहले ऐसे कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बने, जो गांधी परिवार से नहीं हैं। उन्होंने कहा कि खरगे 2021 से राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे, इसके अलावा 2020 से कर्नाटक से राज्यसभा सांसद भी रह चुके हैं। उनके जन्मदिन पर हम कांग्रेस जन भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें दीर्घायु और स्वास्थ्य रखें। शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने कहा कि ईश्वर मल्लिकार्जुन खड़गे को स्वस्थ रखे। मल्लिकार्जुन खड़गे साहब काफी लंबे अरसे से कांग्रेस से जुड़े हैं, उनके नेतृत्व में पार्टी दिन प्रतिदिन प्रगति कर रही है ये देश के हर कांग्रेस जन के लिए सौभाग्य का पल हैं। इस अवसर पर अरशद पवार, पवन मिश्र कटावा, ममनून आलम, रियाज अहमद, सुब्रत सिंह सनी, सियाराम तिवारी, शीतला साहू, इंतजार अहमद,सौरभ सिंह, वरिष्ठ नेता नफीस फारुकी सुनील चौहान आदि लोग मौजूद रहे।

जयसिंहपुर तहसील व जिला मुख्यालय पर कांग्रेस का प्रदर्शन'

मंगलवार को कांग्रेस जनपद में बिजली पानी सड़क खाद आदि समस्याओं को लेकर जिले की तहसील जयसिंहपुर व जिला मुख्यालय का घेराव कर विरोध प्रदर्शन करेंगी। कांग्रेस जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने बताया कि जनपद के किसान खरीफ की फसल की रोपाई को लेकर परेशान हैं ऐसे में उन्हे खाद पानी बिजली आदि संकट से जूझना पड़ रहा है, इन्हीं सब मांगों को लेकर कांग्रेस कल सड़क पर उतरेगी और विरोध प्रदर्शन कर महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा जायेगा।

पड़ोसी ही निकले कातिल80 लाख के लिए 8 साल के बच्चे की हत्या, 80 दिन बाद मिला मासूम का शव

आर्यावर्त संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश के आगरा में फतेहाबाद कस्बे से 80 दिन पहले लापता हुए आठ साल के बच्चे अभय प्रताप की हत्या का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। अपहरण के कुछ ही घंटों बाद अभय की बेरहमी से गला दबाकर हत्या कर दी गई थी और शव को राजस्थान ले जाकर जमीन में गाड़ दिया गया था। इस जघन्य वारदात को अंजाम किसी और ने नहीं, बल्कि अभय के घर के पास रहने वाले दो युवकों ने ही दिया।

आरोपियों का नाम कृष्णा उर्फ भजन लाल और राहुल है। दोनों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। अभय प्रताप का शव शनिवार को राजस्थान के मनिया थाना क्षेत्र में एक प्लास्टिक के बोरे में दबा हुआ मिला। पुलिस के अनुसार, इस पूरे मामले में 80 लाख रुपये की फिरौती का मकसद था। चौंकाने वाली बात यह है कि आरोपी राहुल मृतक अभय के घर के ठीक सामने रहता था।

निर्दयतापूर्वक कर दी हत्या

वहीं कृष्णा का घर भी कुछ ही दूरी पर है। 30 अप्रैल को एक शादी समारोह के दौरान, आरोपियों ने अभय को बहला-फुसलाकर अपनी स्कूटी पर बैठा लिया। रास्ते में वो रोने लगा और अपने माता-पिता के पास जाने की जिद करने लगा। फिर दोनों आरोपियों ने निर्दयतापूर्वक उसकी गला घोंटकर हत्या कर दी। इसके बाद आरोपियों ने उसकी लाश एक प्लास्टिक के बोरे में भरकर स्कूटी में रखी और राजस्थान के मनिया की ओर ले गए।

सबूत मिटाने की कोशिश और शातिर योजना

वहां एक सुनसान जगह पर गड्ढा खोदकर मासूम की लाश को जमीन में दबा दिया। इसके बाद वो सामान्य व्यवहार करते हुए अपने घरों को लौट आए, जिससे किसी को उन पर शक न हो। कृष्णा का जनसेवा केंद्र अभय के घर से चंद कदमों की दूरी पर है और वह अक्सर पुलिसकर्मियों से भी सामान्य बातचीत करता था, जो बच्चे की तलाश में वहीं बैठते थे। राहुल भी रोजाना अपने वेल्डिंग के काम पर जाता था।

फिरौती के पत्र बने गले की फांस

अपहरण के कुछ घंटों बाद ही बच्चे की हत्या कर देने के बावजूद, आरोपियों ने परिवार को फिरौती वसूलने के लिए करीब चार बार पत्र भेजे, जिनमें 80 लाख रुपये तक की मांग की गई। यही फिरौती के पत्र पुलिस के लिए महत्वपूर्ण सुराग साबित हुए। परिजनों और स्थानीय लोगों ने जब पत्रों को पढ़ा, तो उनमें इस्तेमाल किए गए कुछ शब्द कृष्णा की बोलचाल की भाषा से मेल खाते थे।

कृष्णा कई वर्षों तक बाहर रहने के बाद हाल ही में क्षेत्र में जनसेवा केंद्र चला रहा था। पुलिस की मानें तो आरोपी दो महीने से इस वारदात की योजना बना रहे थे। कृष्णा अक्सर बच्चे को टॉफी देता था और उससे बात करता था, ताकि बच्चा उसके साथ घुल-मिल जाए। मृतक अभय के दादा ने हाल ही में अपनी जमीन बेची थी, जिसकी जानकारी आरोपियों को थी।

पुलिस की टीमें अभय की तलाश में थीं

उन्हें पता था कि परिवार के पास पैसे हैं, इसलिए उन्होंने फिरौती वसूलने का यह शातिर जाल बुना। विजय प्रकाश का बेटा अभय प्रताप कक्षा एक का छात्र था। 30 अप्रैल की शाम लगभग चार बजे वह अपने घर के पास से लापता हो गया था, जिसके बाद फतेहाबाद थाने में अज्ञात के खिलाफ अपहरण का केस दर्ज कराया गया था। पुलिस की कई टीमें लगातार अभय की तलाश में जुटी थीं।

फिरौती के पत्रों के बाद पुलिस ने अपनी जांच की दिशा बदलते हुए संदिग्धों की कॉल डिटेल और लोकेशन खंगालनी शुरू की, जिसके आधार पर अंततः अभय का शव बरामद किया गया और हत्यारों को गिरफ्तार किया गया। यह घटना एक बार फिर बच्चों की सुरक्षा और पड़ोसियों पर विश्वास जैसे गंभीर मुद्दों पर चिंता बढ़ाती है। इस मामले में पुलिस की तत्परता और फिरौती के पत्रों से मिले सुरागों ने अपराधियों को पकड़ने में अहम भूमिका निभाई।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक-एक पीड़ित के पास पहुंचे और सुनीं समस्याएं

अधिकारियों को निस्तारण का निर्देश

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को अपने सरकारी आवास पर 'जनता दर्शन' किया। उनके आवास पर प्रदेश भर से 50-55 पीड़ित पहुंचे थे। उन्होंने हर पीड़ति के पास स्वयं पहुंचकर समस्याएं सुनीं, प्रार्थना पत्र लिया और आश्वस्त किया कि सरकार उनके साथ खड़ी है। जनता दर्शन में पुलिस, राजस्व, चिकित्सा सहायता, रोजगार, शिक्षा, आवास, कब्जा, परिवार आदि से जुड़े मामले भी आए। जिस पर प्रार्थना पत्र लेकर मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी की हर समस्या का निराकरण होगा। उत्तर प्रदेश के हर नागरिक की समस्याओं

का समाधान सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के हर नागरिक की सेवा एवं सुरक्षा हमारी सरकार की शीर्ष प्राथमिकता है। सभी जिलों में अधिकारियों को सक्रिय भी किया गया है और सभी प्रकार की समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए निर्देश भी दिए गए हैं।

अधिकारियों को निर्देश-हर पीड़ति की समस्या पर करें तत्काल कार्रवाई

मुख्यमंत्री ने दिव्यांग की बात सुनी और उन्हें मोटराइज्ड ट्राई साइकिल दिलाने को निर्देशित किया। जनता की समस्या सुनते हुए सीएम ने अधिकारियों को त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ लोगों को भरोसा दिलाया कि सरकार हर पीड़ति की समस्या का समाधान कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है। सबको न्याय मिलेगा।

बच्चों को दुलारा और चॉकलेट भी दी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'जनता दर्शन' में अभिभावकों के साथ आए बच्चों से भी बातचीत की। उनका हालचाल जाना, दुलार किया। बच्चों की पढ़ाई के बारे में भी जानकारी ली। सीएम योगी ने चॉकलेट-टॉफी प्रदान कर बच्चों को उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया।

सिक्योरिटी बाउंसर पर छेड़छाड़ का आरोप

लखनऊ। सुशान्त गोल्फ सिटी इलाके में स्थित फीनिक्स प्लासियो माल के बर्थडे मनाने गई युवतीं से सिक्योरिटी बाउंसर ने छेड़छाड़ की। पुलिस ने पीड़ति की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज जांच में जुटी है।

पीड़ति का आरोप है कि वह अपनी सहेली के साथ सोमवार की दोपहर फीनिक्स प्लासियो स्थित रोस्टो बार टोवनिक में गई थी। जहां सिक्योरिटी में तैनात परवेज नाम के बाउंसर न 3 से 4 अन्य लोगो उसकी सहेली के साथ छेड़छाड़ की। पीड़ति का आरोप कि लेडिस गार्ड बुलाकर हाथापाई की गई। पीड़ति की तहरीर के आधार. पुलिस ने मुक़दमा दर्ज कर आरोपितों की तलाश में हैं।

2027 की जंग के लिए कांग्रेस मैदान में उतरी, संगठन सृजन अभियान में गूंजा बदलाव का संकल्प

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में बीते छह दिनों से लगातार जोनवार कार्यशालाओं के जरिए कांग्रेस का ₹संगठन सृजन अभियान₹ अब पूरी ताक़त के साथ 2027 के विधानसभा चुनाव की ओर अग्रसर होता दिख रहा है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव और उत्तर प्रदेश प्रभारी अविनाश पाण्डेय ने सोमवार को लखनऊ में कहा कि यह महज कार्यकारिणी गठन का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह एक प्रदेश व्यापी परिवर्तन अभियान है, जिसकी परिणति आगामी विधानसभा चुनाव में होगी।उन्होंने कहा कि कांग्रेस आगामी पंचायत चुनाव अपने दम पर लड़ेगी और यहीं से 2027 की जंग का शंखनाद होगा। उन्होंने यह भी दोहराया कि जो कार्यकर्ता इन कार्यशालाओं से तैयार हो रहे हैं, वही बदलाव के वाहक बनेंगे।16 जुलाई को मेरठ से शुरू हुई समीक्षा बैठकों का यह सिलसिला ब्रज क्षेत्र के अलीगढ़, बुंदेलखंड के झांसी, प्रयाग जोन के प्रयागराज और पूर्वांचल के गोरखपुर होते हुए अवध क्षेत्र के लखनऊ में सोमवार को समाप्त हुआ। लखनऊ की बैठक खास रही, क्योंकि इसी दिन कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का जन्मदिन भी था। इस अवसर पर केक काटकर उनके दीर्घायु की कामना की गई।अविनाश पाण्डेय ने कहा कि 23 मार्च से प्रारंभ यह संगठन सृजन अभियान 15 अगस्त 2025 तक बूथ स्तर तक पूर्ण हो जाएगा। उन्होंने बताया कि कार्यशालाएं सभी 75 जिलों में आयोजित होंगी।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि जनता अब भाजपा सरकार से पूरी तरह त्रस्त है।

बच्चों को डायरिया से सुरक्षित बनाना योगी सरकार की प्राथमिकता

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। शून्य से पांच साल तक के बच्चों को डायरिया से सुरक्षित बनाना योगी सरकार की प्राथमिकता में शामिल है। इसके लिए पूरे प्रदेश में डायरिया रोको अभियान (स्टॉप डायरिया कैम्पेन) चलाया जा रहा है। 31 जुलाई तक चलने वाले अभियान के तहत विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से डायरिया के प्रति जन जागरूकता की अलख जगाई जा रही है। डायरिया से बचाव, कारण, रोकथाम व उपचार से जुड़े संदेशों वाले पोस्टर-बैनर व आडियो/वीडियो से सुसज्जित वाहन गली-मोहल्लों में पहुंच रहे हैं और लोगों को जागरूक बना रहे हैं। स्कूली बच्चों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कर जागरूकता के सन्देश जन-जन तक पहुंचाए जा रहे हैं। दीवार लेखन और सार्वजनिक स्थलों पर ओआरएस- जिंक कार्नर बनाए गए हैं, निजी अस्पतालों को भी इस अभियान से जोड़ा गया है।

डायरिया से डर नहीं कार्यक्रम का किया जा रहा संचालन

योगी सरकार द्वारा डायरिया के प्रति समुदाय स्तर पर जनजागरूकता बढ़ाने, लोगों को ओआरएस और जिंक की महत्ता को भलीभांति समझाने के लिए पूरे प्रदेश में वृहद स्तर पर चलाये जा रहे स्टॉप डायरिया कैम्पेन की इस साल की थीम डायरिया की रोकथाम, सफाई और ओआरएस से रखें अपना ध्यान तय की गयी है। अभियान का उद्देश्य बच्चों में डायरिया की रोकथाम, ओआरएस व जिंक के उपयोग को प्रोत्साहन और जनसामान्य में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना है। इसके तहत जिलों में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं, जिसमें विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाएं भी स्वास्थ्य विभाग के सहयोग में जुटी हैं। पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इण्डिया (पीएसआई इण्डिया) और केनव्यू ने स्टॉप डायरिया कैम्पेन में सहयोग के लिए "डायरिया से डर नहीं" जैसा कार्यक्रम संचालित कर एक अनूठी पहल की है।

स्वास्थ्य केंद्रों पर ओआरएस और जिंक कार्नर बनाए गए

सीएम योगी के निर्देश पर पीएसआई इण्डिया पहले चरण में प्रदेश के सात जिलों फिरोजाबाद, मथुरा, मुरादाबाद, बदायूं, उन्नाव, गोंडा और श्रावस्ती में शुरू की गयी है। इसके तहत स्वास्थ्य केन्द्रों पर ओआरएस और जिंक कार्नर बनाये गए हैं, निजी अस्पतालों का भी इसमें सहयोग लिया जा रहा है और उनसे क्लिनिक में ओआरएस कार्नर बनाने व डायरिया केस की रिपोर्टिंग की अपील की जा रही है। प्रचार वाहन भी समुदाय के बीच पहुंचकर लोगों को डायरिया के लक्षण, कारण और बचाव आदि के बारे में जागरूक कर रहे हैं। सार्वजनिक स्थलों जैसे- बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन आदि पर ओआरएस कार्नर बनाये गए हैं और जगह-जगह हस्ताक्षर अभियान भी चलाये जा रहे हैं। सार्वजनिक स्थलों और स्वास्थ्य केन्द्रों पर दीवार लेखन के माध्यम से भी जन-जन को जागरूक किया जा रहा है कि डायरिया से डरने की नहीं बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है और डायरिया होने पर बच्चे को जल्द से जल्द ओआरएस का घोल और जिंक का टेबलेट देना है। फ्रंट लाइन वर्कर का अभिमुखीकरण भी किया गया है ताकि वह लोगों को अच्छी तरह से परामर्श प्रदान कर सकें।

मृत्यु दर की प्रमुख वजहों में शामिल है डायरिया

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की निदेशक डॉ. पिंकी जोवल ने बताया कि डायरिया आज भी देश में खास तौर पर कमजोर आबादी और पांच साल से कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में मौजूद है। यह बीमारी और मृत्यु दर के प्रमुख कारणों में से एक बना हुआ है। रोकथाम ही दस्त प्रबन्धन की कुंजी है। डायरिया के रोकथाम के लिए मुख्य गतिविधियों में सुरक्षित पेयजल तक पहुँच, बेहतर स्वच्छता, साबुन-पानी से अच्छी तरह से हाथ धोना, पर्याप्त पोषण जिसमें केवल स्तनपान और पूरक आहार शामिल हों , इसके अलावा समय पर बच्चे का टीकाकरण भी कराना शामिल है। इसके साथ ही ओआरएस और जिंक के साथ प्राथमिक उपचार शीघ्र स्वस्थ होने और निवारक उपायों के माध्यम से मृत्यु से बचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आशा कार्यकर्ताओं द्वारा तैयार की जा रही बच्चों की सूची

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर दस्त की रोकथाम, उपचार और प्रबन्धन से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए हर साल डायरिया रोको अभियान (स्टॉप डायरिया कैम्पेन) चलाया जाता है। हर साल की भांति इस साल भी 16 जून से 31 जुलाई तक यह अभियान पूरे प्रदेश में चलाया जा रहा है। अभियान से पूर्व आशा कार्यकर्ताओं द्वारा गांव के पांच साल तक के बच्चों की सूची तैयार कराई जा चुकी थी, ऐसे बच्चों वाले घरों के सदस्यों को ओआरएस और जिंक की महत्ता को भलीभांति समझाया गया है । ओआरएस के पैकेट भी इन बच्चों के परिवार वालों को प्रदान किये गए हैं कि ताकि आपात स्थिति में वह उसका आसानी से इस्तेमाल कर सकें ।

मां का दूध पीने वाले बच्चे को दस्त के दौरान भी कराएं स्तनपान

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उत्तर प्रदेश के महाप्रबंधक बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम डॉ. मिलिंद वर्धन का कहना है कि आज भी शून्य से पांच साल तक के बच्चों की मौत का एक प्रमुख कारण डायरिया है, जबकि दस्त की रोकथाम और उपचार पूरी तरह संभव है। बच्चे को दिन भर में तीन या तीन से अधिक बार दस्त हो तो समझना चाहिए कि बच्चा डायरिया से ग्रसित है और ऐसे में उसको तत्काल ओआरएस का घोल देना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न होने पाए, साथ ही निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर संपर्क करना चाहिए। इसके साथ ही जिंक टेबलेट उम्र के मुताबिक़ निर्धारित खुराक और निर्धारित अवधि तक देना शुरू कर देना चाहिए। ओआरएस जहां शरीर में पानी की कमी को दूर करता है वहीं जिंक दस्त की अवधि को कम करता है। इसके साथ ही बच्चे की इम्युनिटी को भी मजबूत बनाता है।

आईसीएएस दीक्षांत समारोह में ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य में एआई बनाम मानव बुद्धिमत्ता पर चर्चा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। इंडियन काउंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजिकल साइंसेज (आईसीएएस), लखनऊ चैप्टर 2 के तत्वावधान में आयोजित दीक्षांत समारोह 2025 का सर्टिफिकेट वितरण समारोह रविवार की देर शाम सीएमएस महानगर में आयोजित किया गया। समारोह में विद्वानों, वैज्ञानिकों और सिविल सेवकों ने एकत्रित होकर 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम मानवीय प्रज्ञाः ज्योतिष के दर्पण में' पर गंभीरता से चर्चा की। समारोह की अध्यक्षता आईसीएएस के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रमेश चिंतक ने की, जिन्होंने एल्गोरिदम द्वारा तेजी से आकार लेने वाले विश्व में पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की।

आमंत्रित विशिष्ट व्यक्तियों ने विषय को संबोधित करते हुए विविध अनुशासनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए, जैसे-डेटा विज्ञान और शासन से लेकर आध्यात्मिक क्षेत्र तक। अतिथियों में शेर बहादुर सिंह-सदस्य उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा आयोग, ऋचा रस्तोगी-आयकर आयुक्त, प्रो. पंकज श्रीवास्तव-वैज्ञानिक, एमएलएनआर, तेजस्कर पांडे ज्योतिषाचार्य, उप सचिव, उत्तर प्रदेश आरटीआई आयोग, रजनीश गुप्ता, आईआरएसई, एडीआरएम, उत्तर पूर्व रेलवे, डॉ. सुधाकर शुक्ला, प्रमुख, स्कूल ऑफ जियोइन्फॉर्मेटिक्स, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, उत्तर प्रदेश शामिल रहे।

डॉ. शुक्ला ने जोर दिया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता ज्योतिषीय डेटा को सरल बनाने में मदद कर सकती है, लेकिन मानव अंतर्ज्ञान व्याख्या में अपूरणीय है। इसी तरह के विचार तेजस्कर पांडे ने व्यक्त किए, जिन्होंने अपनी नौकरशाही अनुभव से प्रौद्योगिकी और पारंपरिक ज्ञान के संतुलित संश्लेषण के लिए तर्क दिया। बौद्धिक रूप से प्रेरक चर्चा के बाद, आईसीएएस पाठ्यक्रमों को पूरा करने वाले स्नातक विद्वानों को प्रमाण पत्र औपचारिक रूप से वितरित किए गए। प्रत्येक छात्र को ज्योतिष के अध्ययन में उनकी समर्पण के लिए मान्यता दी गई।

कार्यक्रम का नेतृत्व सूर्यकांत मिश्रा, आईआरएस (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष आईसीएएस लखनऊ चैप्टर 2 ने किया । कार्यक्रम में उपाध्यक्ष और पाठ्यक्रम समन्वयक श्री प्रकाश श्रीवास्तव, सचिव नितिन द्विवेदी और वरिष्ठ संकाय सदस्य संतवाना जौहरी, तनुश्री (केंद्र समन्वयक, गोरखपुर) और सुनीता श्रीवास्तव ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दीक्षांत समारोह ने मशीन बुद्धिमत्ता के तेजी से उदय के बीच मानव अंतर्दृष्टि की स्थायी प्रासंगिकता की एक समय पर याद दिलाई। यदि ज्योतिष वास्तव में जीवन का एक दर्पण है, तो इस कार्यक्रम में परिलक्षित प्रतिबिंबों ने एल्गोरिदम और अंतर्ज्ञान दोनों को साथ-साथ दर्शाया।

टॉप 50 इंडियन आइकॉन अवॉर्ड 2025 : मुंबई में होगा भव्य आयोजन, लखनऊ में हुई प्रेसवार्ता

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। देश के प्रतिष्ठित सेलिब्रिटी अवॉर्ड समारोह 'टॉप 50 इंडियन आइकॉन अवॉर्ड 2025' का पाँचवां संस्करण इस वर्ष और भी अधिक भव्यता और गरिमा के साथ 16 सितंबर को मुंबई के इस्कॉन ऑडिटोरियम, जुहू में आयोजित किया जाएगा। इस भव्य आयोजन से पहले इसकी जानकारी देने के लिए आज लखनऊ के होटल आरिफ कैसल में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें कई प्रमुख हस्तियों ने हिस्सा लिया।इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार में पूर्व मंत्री व विधायक ओमप्रकाश सिंह तथा प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक दुष्यंत प्रताप सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। आयोजन का नेतृत्व स्वयं दुष्यंत प्रताप सिंह द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह अवॉर्ड शो देश और विदेशों में रह रहे भारतीयों की उन प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता है, जो कला, साहित्य, समाजसेवा, व्यापार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दे रहे हैं, लेकिन अक्सर मंच के अभाव में वह पहचान नहीं मिल पाती जिसकी वे हकदार होते हैं।फिल्म निर्देशक दुष्यंत प्रताप सिंह ने कहा, "टॉप 50 इंडियन आइकॉन अवॉर्ड देश की प्रतिभाओं को वैश्विक मंच प्रदान करता है। यह केवल सम्मान समारोह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन है जो नए भारत की सकारात्मक छवि को विश्व मंच पर सशक्त करता है।"पूर्व मंत्री ओमप्रकाश सिंह ने कहा, "देश की उभरती हुई प्रतिभाओं को अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मानित करना निश्चित रूप से एक सराहनीय पहल है। ऐसे आयोजन युवाओं को प्रेरणा देते हैं और राज्य विशेषकर उत्तर प्रदेश की प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पहचान दिलाते हैं।

प्रदेश में पशुधन की सेहत और दुग्ध उत्पादन को मिलेगा संबल, टीकाकरण से लेकर IVF तक विशेष अभियान चलाने के निर्देश

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पशुधन और दुग्ध विकास को लेकर बड़ी कार्ययोजना पर काम शुरू हो गया है। प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने और दुग्ध उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि के लिए व्यापक निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने 15 दिवसीय विशेष एफएमडी टीकाकरण अभियान शुरू करने का आदेश दिया है, जिसमें शत-प्रतिशत आंकड़े भारत पशुधन ऐप पर दर्ज किए जाएंगे। साथ ही, जिन पशुओं का अब तक पंजीकरण नहीं हुआ है, उन्हें टैग लगाकर तत्काल पंजीकृत करने को कहा गया है।यह निर्देश धर्मपाल सिंह ने विधान भवन स्थित अपने कार्यालय में विभागीय समीक्षा बैठक के दौरान दिए। उन्होंने कहा कि टीकाकरण अभियान में राजस्व व पंचायत विभाग के अधिकारियों की भी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित कराई जाए। इसके साथ ही प्रदेश के 10 पशुधन प्रक्षेत्रों में सेक्सड सार्टेड सीमेन, भ्रूण प्रत्यारोपण और इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) प्रयोगशालाओं की स्थापना के निर्देश दिए गए हैं। ये प्रयोगशालाएं पीपीपी मॉडल पर संचालित होंगी।मंत्री ने विभागीय अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि दिसंबर माह तक 80% बजट व्यय पूरा हो। उन्होंने गोवंशीय देशी नस्लों के संरक्षण और उन्नयन के लिए कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया को और गति देने की बात कही, जिससे अधिक दूध देने वाली देशी मादा गायें तैयार की जा सकें और स्वदेशी नस्लें संरक्षित रह सकें। चारा बीज के उपयोग में प्राथमिकता गोचर भूमि और गोआश्रय स्थलों को दी जाएगी।गोआश्रय स्थलों के निरीक्षण को लेकर उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि वहां चारा, भूसा, प्रकाश, पानी, औषधि, विद्युत और बैठने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। हर गौशाला की निगरानी नियमित हो और आवश्यकता अनुसार तत्काल सुधारात्मक कदम उठाए जाएं।दुग्ध विकास को लेकर भी बैठक में कई अहम फैसले लिए गए। मंत्री ने निर्देश दिया कि गोरखपुर, कन्नौज, कानपुर और अंबेडकरनगर स्थित डेयरी प्लांट्स को एनडीडी को हैंडओवर करने की प्रक्रिया शीघ्र शुरू की जाए। साथ ही ₹परागर₹ ब्रांड के उत्पादों की पैकिंग एक समान हो और मार्केटिंग को मजबूत किया जाए। दुग्ध समितियों के संचालन में पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए तथा डीपीएमसीयू की गुणवत्ता से कोई समझौता न किया जाए।

सेंट थॉमस मिशन स्कूल में जोनल ड्राइंग-पेंटिंग प्रतियोगिता, अनुकल्प, सृष्टि और दिव्यांशी ने मारी बाजी

लखनऊ। सेंट थॉमस मिशन स्कूल में आयोजित ए.एस.आई.एस.सी. जोनल स्तरीय ड्राइंग एवं पेंटिंग प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों ने रचनात्मकता और रंगों की अद्भुत छटा बिखेरी। प्रतियोगिता में 19 विद्यालयों के 49 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सब जूनियर, जूनियर और सीनियर तीन वर्गों में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से सामाजिक संदेशों, प्रकृति, संस्कृति और कल्पनाशक्ति का बेहतरीन चित्रण किया।सब जूनियर वर्ग में सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, गोमतीनगर के अनुकल्प सिंह ने प्रथम स्थान हासिल किया। मॉडर्न एकेडमी की मैमुना जावेद द्वितीय और वंशिका कश्यप (सेंट थॉमस) व देवांशी त्रिपाठी (गुरुकुल अकादमी) ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया।

राजकीय आईटीआई, लखनऊ में आयोजित रोजगार मेले में 59 युवाओं को मिला नौकरी का अवसर

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप संचालित मुख्यमंत्री मिशन रोजगार योजना के अंतर्गत सोमवार को राजधानी स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), अलीगंज में रोजगार मेले का सफल आयोजन किया गया। इस मेले का उद्देश्य अधिक से अधिक युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराना रहा।रोजगार मेले में टाटा मोटर्स, इयूजीनिक्स मेडी साइंस प्राइवेट लिमिटेड, वी विन लिमिटेड, डीलक्स बियरिंग, पेटीएम और एजेस फेडरल लाइफ इंश्योरेंस जैसी देश की जानी-मानी कंपनियों ने प्रतिभाग किया। इन कंपनियों के प्रतिनिधियों ने युवा प्रतिभाओं से संवाद किया और विभिन्न पदों के लिए उनकी योग्यताओं के अनुसार चयन प्रक्रिया संपन्न की।राजकीय आईटीआई के प्रधानाचार्य राज कुमार यादव ने इस अवसर पर कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देशों के अनुसार युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने प्रतिभागी अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कंपनियों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक उम्मीदवारों को रोजगार का अवसर प्रदान करें।आईटीआई के ट्रेनिंग, काउंसिलिंग एवं प्लेसमेंट ऑफिसर एम.ए. खाँ ने बताया कि रोजगार मेले में कुल 122 अभ्यर्थी सम्मिलित हुए, जिनमें से 90 अभ्यर्थी अर्ह पाए गए। इन सभी का कंपनियों द्वारा साक्षात्कार लिया गया, जिसके उपरांत 59 युवाओं का विभिन्न पदों के लिए चयन किया गया। चयनित अभ्यर्थियों को 10,000 से 21,000 रुपये प्रतिमाह तक का वेतन मिलेगा।

परिवहन निगम की बसों में लोड फैक्टर बढ़ाने के निर्देश, चालकों-परिचालकों को दी जाएगी काउंसलिंग

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक ने वर्षा ऋतु में घटती सवारियों के मद्देनज़र बसों के लोड फैक्टर और निगम की आय में सुधार लाने के उद्देश्य से सभी क्षेत्रीय और सहायक क्षेत्रीय प्रबंधकों को विशेष निर्देश जारी किए हैं। इन निर्देशों के तहत चालकों और परिचालकों को उनकी बस में प्रतिदिन कम से कम पांच यात्रियों की संख्या बढ़ाने के संबंध में काउंसलिंग दी जाएगी।प्रबंध निदेशक ने कहा कि वर्षा ऋतु के दौरान यात्रियों की संख्या में स्वाभाविक कमी देखी जाती है, जिससे बसों की आमदनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया कि लोड फैक्टर में गिरावट सीधे परिवहन निगम की आय को प्रभावित कर रही है। ऐसे में बस चालकों और परिचालकों से अपेक्षा है कि वे सक्रिय प्रयास कर अतिरिक्त यात्रियों को जोड़ने में सहयोग करें।

जनता की समस्याएं सुनने खुद पहुंचे उपमुख्यमंत्री : 3 दर्जन से अधिक जिलों से आए फरियादियों को मिला भरोसा, अधिकारियों को दिया त्वरित समाधान का निर्देश

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को अपने लखनऊ कैम्प कार्यालय में जनता दर्शन कार्यक्रम के दौरान प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए सैकड़ों लोगों की समस्याएं ध्यानपूर्वक सुनीं और उनके निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए। जनता दर्शन में शामिल हुए लोगों ने भूमि विवाद, राजस्व संबंधित मुद्दों, चिकित्सा सहायता, पेंशन, आवास, सड़क, बिजली-पानी, पुलिस कार्रवाई, शिक्षा और रोजगार से जुड़ी शिकायतें उप मुख्यमंत्री के समक्ष रखीं।उप मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि जनता दर्शन आमजन से सीधे संवाद का सशक्त माध्यम है, जिससे जमीनी स्तर की वास्तविक स्थिति का पता चलता है। उन्होंने अधिकारियों को

निर्देशित किया कि जनसमस्याओं के समाधान में कोई शिथिलता नहीं होनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि जिन मामलों में आवश्यकता हो, वहां अधिकारियों को मौके पर जाकर निरीक्षण कर त्वरित समाधान सुनिश्चित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई भी पीड़ित व्यक्ति निराश न लौटे, यही सरकार की प्राथमिकता है।जनता दर्शन में बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएं, बुजुर्ग और युवा उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री स्वयं लोगों के पास पहुंचे और एक-एक व्यक्ति की बात गंभीरता से सुनी। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि फरियादियों की समस्याओं का समाधान इस तरह से हो कि उन्हें दोबारा किसी अधिकारी या कार्यालय के चक्कर न लगाने पड़ें।केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता हर जरूरतमंद व पात्र व्यक्ति को सभी सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाना है। उन्होंने अधिकारियों से यह भी कहा कि उत्पीड़न, अवैध कब्जों और भूमि विवादों से संबंधित मामलों को पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ निपटाया जाए और जहां आवश्यकता हो, कठोर कार्रवाई की जाए।जनता दर्शन में लगभग तीन दर्जन जिलों के फरियादी उपस्थित थे। उप मुख्यमंत्री ने फर्रूखाबाद, बस्ती, बाराबंकी, बदायूं, सुल्तानपुर, कौशांबी, बरेली, आगरा, फिरोजाबाद और शाहजहांपुर के जिलाधिकारियों व पुलिस अधिकारियों से दूरभाष पर वार्ता कर संबंधित मामलों पर त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए।उन्होंने विशेष रूप से भूमि विवादों के समाधान के लिए राजस्व व पुलिस विभाग की संयुक्त टीम गठित कर मौके पर भेजने को कहा ताकि ठोस और त्वरित समाधान हो सके। महिलाओं, दिव्यांगों और बुजुर्गों की समस्याओं को प्राथमिकता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों को तत्काल आवश्यक निर्देश जारी किए गए।उप मुख्यमंत्री ने भरोसा दिलाया कि प्रदेश सरकार जनता के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है और सभी समस्याओं का समाधान समयबद्ध और संतुष्टिपरक ढंग से किया जाएगा।

दादी-नानी की कहानियां व लोरियां में छिपा सकारात्मक संदेश

पापा की परी या परा हो या दादी-नानी के नाती-पोतें, दादी-नानी की कहानियां या लोरियां आज बीते जमाने की बात हो गई है। दादी-नानी की कहानियां व लोरियों में सकारात्मक संदेश छिपा होता था। यह कोई मनोरंजन का माध्यम ना होकर बच्चों के मानसिक, पारिवारिक व सामाजिक समझ और जिज्ञासु प्रवृति को बढ़ावा देती थी। बच्चों में क्यूरिओसिटी बढ़ाने के साथ ही सार्थक अंत होने से बच्चों को कोई ना कोई संदेश अवश्य मिलता था। यह कोई हमारे देश की ही बात नहीं थी अपितु समूचे विष्व में दादी-नानी की कहानियों व लोरियों से बच्चों को एकाग्रता, जिज्ञासु प्रवृति, सोच व कल्पना शक्ति को बढ़ावा देने के साथ ही संवेदनशीलता और संबंधों की अहमता को समझाने में सहायक होती थी। अब वैश्विक अध्ययनों से यह साफ हो गया है कि इसके नकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं। हांलाकि यह जेनरेशन जेड यानी की 1996 से 2010 की पीढ़ी इस तथ्य को अभी समझ नहीं पा रही है पर वैश्विक अध्ययनों ने यह साफ कर दिया है कि हालात यही रहे तो आने वाली पीढ़ी से संवेदनशीलता और अच्छे-बुरे की बात करना कोई मायने नहीं रखेगी। दरअसल आज के बच्चों की दुनिया दादी-नानी की कहानियां या लोरियों के स्थान पर मोबाइल और टीवी स्क्रीन पर खुराफाती, हिंसात्मक, नकारात्मक, नित नए दुश्चक्र रचते और संबंधों को तार तार करते सिरियलों या इसी तरह के एपिसोड़ से दो चार हो रही है। आज के बच्चों में हिंसा, बदले की भावना, इच्छा, मिल बांटने के स्थान पर एकलखोरी और ना जाने कितनी ही नकारात्मकता मोबाइल और टीवी स्क्रीन पर चलने वाले सिरियलों, एपिसोड़ों और प्रसारित होने वाले गेम्स के माध्यम से परोसी जा रही है। इसके परिणाम भी सामने आ रहे हैं। बच्चों में रेवेन्ज की भावना कूट कूट कर भरती जा रही है तो सहनशक्ति तो कोई मायने ही नहीं रखती। रिश्ते तार तार हो रहे हैं यह एक अन्य बात है। जेन जेड़ पीढ़ी की मानसिकता का असर आने वाली पीढ़ी पर दिखाई देने लगी है। जेन जेड बिना काम की प्रतिस्पर्धा में तो आगे हैं पर सामाजिक समरसता की भावना से दूर होती जा रही है। अपने में सिमटती यह पीढ़ी देश और समाज को सकारात्मकता क्या दे पायेगी यह सवालों के घेरे में आने लगा है। दरअसल दादी-नानी की कहानियां भले ही उनमें से कुछ कपोल कल्पना के आधार पर हो या फिर राजारानी की कहानियां हो बच्चों के कोमल मन को एक संदेष देती थी। इसके साथ ही उस जमाने में बच्चों को पढ़ने-पढ़ाने की आदत ड़ाली जाती थी। लाइब्रेरी का कांसेप्ट तो आज बदल ही चुका है। आज लाईब्रेरी का अर्थ किराये के स्थान पर बनी केबिननुमा दढ़बे में अपने घर से ले जाई गई किताबों को रटने तक सीमित हो गया है। मौहल्लों में पांच-सात घरों की दूरी पर ही इस तरह की लाइब्रेरी मिल जाएगी। जबकि एक जमाने में लाइब्रेरी के मायने ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएं आदि को वहां बैठकर पढना व आवश्यकता होने पर लाइब्रेरी की सदस्यता प्राप्त कर पुस्तक आदि घर लाकर पढ़ना होता था। आज तो पढ़ने-पढ़ाने की आदत ही समाप्त होती जा रही है। एक समय था जब वार्षिक परीक्षाओं के बाद बारी बारी से दादी-नानी के घर धमाचौकड़ी होती थी। मजे की बात की सभी मिजाज के हम-उम्र बच्चें होने से आपसी तालमेल की शिक्षा भी मिल जाती थी। फिर रात को दादी-नानी के साथ सोने और सोने से पहले कहानियां सुनने का सिलसिला चलता था। इससे कोमल मन को अलग तरह का ही संदेश मिलता था। चंदामामा, चंपक सहित बहुत सी बच्चों की पत्रिकाएं घर में होना और बच्चों के पास होना गौरव की बात माना जाता था। आपस में बांट कर बारी बारी से पढ़ने की हौड़ लगती थी। खैर यह बीते जमाने की बात हो गई है। अब तो गुगल गुरु ने लगभग सभी की पढ़ने पढ़ाने की आदत को ही बदल कर रख दिया है। डिजिटल युग के इस दौर में सोशल मीडिया के माध्यम समूचे समाज को बुरी तरह से प्रभावित कर रहे हैं। शहरीकरण के साथ ही संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है तो समय की कमी, अंधी प्रतिस्पर्धा, माता-पिता व परिजनों का लिखने पढ़ने से परहेज, बच्चों को प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी में ही जुटा देने और होमवर्क और ट्यूशन कल्चर पढ़ाई की दशा और दिशा को ही बदल दिया है। कोरोना के बाद तो जिस तरह से मोबाइल को ही अध्ययन का माध्यम बनाया गया उससे भी बच्चे मोबाइल के दास हो गए। अब तो स्कूलों में भी सभी संदेश मोबाइल पर ही देने का चलन चल गया है और इससे स्कूल की डायरी का भी कोई महत्व नहीं रह गया है। ऐसे में मोबाइल ही माध्यम हो जाने से बच्चों का मोबाइल गेम्स से लेकर सोशल मीडिया के माध्यमों द्वारा बालमन को सीधे सीधे प्रभावित किया जा रहा है। मनोविज्ञानियों और शिक्षा-समाज के क्षेत्र में काम कर रहे विशेषज्ञों को दायित्व इससे और अधिक बढ़ गया है। एक समय था जब बच्चों को कोर्स में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों के इतर मानसिक और चारित्रिक विकास वाले साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता था। आज पंचतंत्र, हितोपदेश, ईसप की कहानियां जेन जेड पीढ़ी भी नहीं जानती होगी तो फिर देश विदेश के अन्य उत्कृष्ट साहित्य को पढ़ने पढ़ाने की तो दूर की बात होगी।

विपक्ष की लोकतंत्र पर चिंता या सत्तालोभ की राजनीति?

विपक्षी दल मोदी एवं भाजपा पर लगातार आक्रामक हैं। राहुल गांधी और अन्य दलों के नेता संविधान की प्रति लहराकर यह दिखाने की कोशिश करते हैं जैसे संविधान खतरे में है और उन्हें उसे बचाना है। लेकिन भारत की जनता अब परिपक्व एवं समझदार हो गयी है, उसे अच्छा-बुरे में फर्क दिखता है।

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र आज विश्व के सबसे बड़े, जीवंत और जागरूक लोकतंत्रों में गिना जाता है। यह संविधान की मजबूत नींव, संस्थाओं की पारदर्शिता और जनता की जागरूकता से संचालित होता है। परंतु विडंबना यह है कि देश का विपक्ष, विशेषकर कांग्रेस और उनके नेता राहुल गांधी, बार-बार लोकतंत्र और संविधान पर खतरे की झूठी दुहाई देकर एक अनावश्यक और निरर्थक बहस छेड़ते रहे हैं, वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा को घेरने एवं दोषी ठहराने के लिये न केवल उन पर आधारहीन आरोप लगाते रहते हैं, वरन देश की संवैधानिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और संविधान के ही खतरे में होने का राग अलापते हुए उन्हें लांछित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे नेता संविधान की दुहाई देते हैं, वे स्वयं संविधान और कानून की धज्जियां उड़ाते दिखते हैं। लोकतंत्र की आत्मा पर इस तरह का प्रहार विपक्ष की भूमिका पर एक बड़ा प्रश्न है। विडम्बना एवं चिन्ताजनक है कि राहुल गांधी अपनी विदेश यात्राओं में भी मोदी-भाजपा का विरोध करते-करते देश-विरोध पर उतर जाते हैं, जिससे विदेशों में भारत की छवि का भारी नुकसान होता है और विदेशियों को लगता था कि भारत में लोकतंत्र और संविधान ढह रहा है।

नेता-प्रतिपक्ष राहुल गांधी एवं उनके सहयोगी जब यह कहते हैं कि 'देश में लोकतंत्र समाप्त हो गया है', 'संविधान खतरे में है', तब यह केवल एक राजनीतिक शगूफा प्रतीत होता है, न कि कोई तर्कसम्मत आलोचना। यदि वास्तव में लोकतंत्र खतरे में होता, तो क्या वे हर मंच से खुलकर सरकार की आलोचना कर पाते? क्या संसद, मीडिया, चुनाव आयोग, और न्यायपालिका जैसी संस्थाएं उनके वक्तव्यों को स्थान देतीं? असल में तो 1975 में लोकतंत्र एवं संविधान खतरे में आये थे जब तत्कालिन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपनी सरकार बचाने हेतु अनुच्छेद 352 के अंतर्गत 'आंतरिक अशांति' के आधार पर आपातकाल लगाया तथा लोकतंत्र और संविधान को दरकिनार कर हजारों नेताओं एवं बेगुनाह लोगों को कठोर कानूनों के अंतर्गत जेल भेज दिया। आजादी के बाद तब पहली और आखरी बार लोकतंत्र खतरे में आया था, तब संविधान भी खतरे में चला गया था। राहुल गांधी अपने गिरेबान में झांकने एवं कांग्रेस के अतीत को देखने की बजाय मोदी-भाजपा पर लोकतंत्र एवं संविधान को खतरे में डालने का बेबुनियाद, भ्रामक एवं आधारहीन आरोप मंढते हैं। इन त्रासद स्थितियों में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विपक्ष लोकतंत्र की रक्षा नहीं, बल्कि अपने खोए हुए जनाधार को पुनः प्राप्त करने के लिए लोकतंत्र को बदनाम करने का प्रयास कर रहा है। विशेषतः लोकसभा हो या विधानसभा के चुनाव-इनमें जरूरी एवं जनता से जुड़े विषयों को उठाने की बजाय लोकतंत्र एवं संविधान के खतरे में होने के राग से जनता को गुमराह करना आम बात हो गयी है।

देशभर में एवं अनेक राज्यों में बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल और म्यांमार आदि के अवैध घुसपैठियें बड़ी मात्रा में घुस आये हैं। अपने वोट बैंक को बढ़ाने के लिये इन घुसपैठियों को इन विपक्षी दलों की शह पर ही जगह मिल रही है, ये घुसपैठियें न केवल फर्जी तरीकों से आधार, पैन, राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र आदि दस्तावेज प्राप्त कर कई निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता-सूचियों में अपना नाम अंकित करा लिया है। यह लोकतंत्र, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं जनसंख्या संतुलन के लिए गंभीर खतरा है, चुनाव आयोग ने इस पर अपना रुख सख्त करते हुए सभी राज्यों में 'मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण' का निर्णय लिया है। बिहार में वह ऐसे लोगों की पहचान संबंधी पहल कर चुका है, पर विपक्ष को इस पर आपत्ति है और इसे सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती भी दी। न्यायालय ने आयोग की इस कार्रवाई पर रोक नहीं लगाई।

विपक्ष लम्बे समय से चुनाव आयोग को निशाना बना रहा है, कभी निष्पक्ष मतदान पर तो कभी मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण पर सवाल उठाते रहा है। चूंकि चुनाव ही सत्ता की सीढ़ी है, इसलिए लोकसभा चुनाव में परास्त होने और अनेक राज्यों में अप्रासंगिक होने से चुनाव आयोग पर आरोप तथा लांछन लगाना विपक्ष के लिए काफी आसान हो गया है। कभी वह चुनाव आयुक्तों की नियुक्तियों और निर्णयों पर अंगुली उठाता है, कभी उसे भाजपा के इशारे पर काम करने वाला बताता है, कभी ईवीएम, मतदाता सूची में अनियमितता, डाटा देने में विलंब, दलीय पक्षपात आदि का मुद्दा उठाकर चुनाव आयोग की छवि नष्ट करने का प्रयास करता है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में मतदाता सूची के पुनरीक्षण को हरी झंडी देकर विपक्ष की बोलती बंद कर दी।

विपक्ष की भूमिका लोकतंत्र में रचनात्मक आलोचना और वैकल्पिक नीतियों के माध्यम से शासन को दिशा देना होती है। किंतु आज का विपक्ष न तो पाकिस्तान-चीन के खतरनाक मनसूंबों, न गरीबी, न महंगाई, न बेरोजगारी, न सांप्रदायिक सौहार्द, न सीमा पर पड़ोसी देशों की चुनौती, और न ही किसानों, युवाओं और महिलाओं की समस्याओं को लेकर कोई ठोस योजना प्रस्तुत कर पा रहा है और न ही इन बुनियादी मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठा पा रहा है। उनकी राजनीति केवल मोदी और भाजपा विरोध तक सीमित होकर रह गई है। जब राजनीति 'विकास' की बजाय 'विरोध' पर केंद्रित हो जाए, तो वह जनहित नहीं, केवल सत्ता की भूख बन जाती है।

विपक्षी दल मोदी एवं भाजपा पर लगातार आक्रामक हैं। राहुल गांधी और अन्य दलों के नेता संविधान की प्रति लहराकर यह दिखाने की कोशिश करते हैं जैसे संविधान खतरे में है और उन्हें उसे बचाना है। लेकिन भारत की जनता अब परिपक्व एवं समझदार हो गयी है, उसे अच्छा-बुरे में फर्क दिखता है। भाजपा पर 'तानाशाही', 'संविधान बदलने की साजिश', 'जनविरोधी नीतियों' जैसे आरोप लगाना विपक्ष की आदत बन चुकी है। किंतु हर बार जनता ने चुनाव में स्पष्ट बहुमत देकर इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है। जनता जानती है कि ऑपरेशन सिन्दूर, डिजिटल इंडिया, गरीबमुक्त भारत, आत्मनिर्भर भारत, महिला आरक्षण, जी-20 की सफल अध्यक्षता, भ्रष्टाचार पर कार्रवाई, गरीबों के लिए मुफ्त राशन, उन्नत सड़के, चमकती रेल एवं चमकते रेल्वे स्टेशन, घर, शौचालय और जल जैसी योजनाएं सिर्फ नारों से नहीं, संकल्प और समर्पण से संभव हुई हैं।

क्या राहुल गांधी या इंडी गठबंधन के पास कोई ठोस आर्थिक नीति, सुरक्षा रणनीति, या सामाजिक समरसता का ब्लूप्रिंट है? क्या वे यह बता सकते हैं कि वे भारत को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं, या केवल मोदी विरोध को ही नीति मान बैठे हैं? भारतीय जनता राजनीतिक रूप से परिपक्व हो चुकी है। वह अब भावनात्मक और भ्रामक नारों के बजाय ठोस उपलब्धियों और दूरदर्शिता को प्राथमिकता देती है। ऐसे में विपक्ष का यह दुष्प्रचार केवल उनकी साख को ही नुकसान पहुंचा रहा है। विपक्ष को चाहिए कि वह सकारात्मक राजनीति करे, वैकल्पिक नीति प्रस्तुत करे, और जनता के विश्वास को अर्जित करे, न कि लोकतंत्र के अस्तित्व को ही संदेह के घेरे में लाकर अपनी विफलताओं पर पर्दा डाले। राजनीति केवल विरोध नहीं, समाधान का माध्यम होनी चाहिए।

अजब-गजब

बंदर और आदमी में दिखा 'गजब का प्यार', लोग बोले- दोनों कितने जिगरी हैं यार

इंटरनेट पर इन दिनों एक ऐसा वीडियो खूब सुर्खियां बटोर रहा है, जिसे देखकर हर कोई चकित है। यह वीडियो एक शख्स और एक बंदर के बीच की अद्भुत दोस्ती को दिखाता है, जिसने लाखों नेटिजन्स का दिल जीत लिया है। दोनों के बीच की बॉन्डिंग इतनी क्यूट है कि वायरल क्लिप देखने के बाद आप भी कहेंगे, दोनों कितने जिगरी हैं यार!

वायरल हो रहे वीडियो में देखा जा सकता है कि एक शख्स मोबाइल में कुछ देख रहा है और उसके बगल में ही एक बंदर कुर्सी पर बैठा हुआ है। तभी बंदर शख्स के कान में कुछ फुसफुसाता है, और शख्स भी उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुनता है। इसके बाद शख्स भी बंदर के कान में कुछ कहता है और फिर से मोबाइल देखने में बिजी हो जाता है।

वीडियो में आप देखेंगे कि कुछ ही सेकंड बाद शख्स अपना फोन बंदर को थमा देता है। यह देखकर ऐसा लगता है मानो बंदर ने उससे कहा हो, अब मेरी बारी है मोबाइल देखने की।

नेटिजन्स बंदर और इंसान की इस अनोखी दोस्ती पर जमकर कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने कहा, मुझे भी ऐसा ही बंदर चाहिए। दूसरे ने लिखा, दोनों में क्या गजब की बॉन्डिंग है। एक अन्य यूजर ने कमेंट किया, बंदर को भी मोबाइल का चस्का लग गया।

ब्लॉग

क्या बिहार में सुशासन अब जंगलराज में बदल रहा है?

ललित गर्ग

बिहार में एक बार फिर कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। बेखौफ अपराधियों का आतंक, दिन-दहाड़े हत्याएं, लूट, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध यह संकेत दे रहे हैं कि 'सुशासन बाबू' के नाम से मशहूर नीतीश कुमार का प्रशासन कहीं अपने वादों और आदर्शों से भटकता नजर आ रहा है। आगामी विधानसभा चुनाव की दस्तक के बीच आमजन में यह सवाल तेजी से उभर रहा है कि क्या बिहार में सुशासन अब फिर से जंगलराज में तब्दील हो रहा है? क्योंकि व्यापारियों, राजनेताओं, वकीलों, शिक्षकों और आम नागरिकों को निशाना बनाकर की गई लगातार हत्याओं ने बिहार की कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। पुलिस इन घटना के लिए अवैध हथियारों और गोला-बारूद की व्यापक उपलब्धता को ज़िम्मेदार ठहरा रही है, पुलिस के उच्च अधिकारियों के कुछ बेतूके बयान हास्यास्पद एवं शर्मनाक होने के साथ चिन्ताजनक है। उनके हिसाब से जून में ज्यादा वारदात होती हैं, क्योंकि मॉनसून आने के पहले तक किसान खाली बैठे होते हैं। राज्य की राजधानी पटना के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में दिनदहाड़े 5 शूटर्स ने जिस तरह एक गैंगस्टर की हत्या की, उससे यही लगता है कि कानून-व्यवस्था का डर खत्म हो चुका है। पिछले 10 दिनों में एक के बाद एक कई आपराधिक घटनाओं में व्यापारी गोपाल खेमका, भाजपा नेता सुरेंद्र कुमार, एक 60 वर्षीय महिला, एक दुकानदार, एक वकील और एक शिक्षक सहित कई हत्याओं ने चुनावी राज्य को हिलाकर रख दिया है।

बिहार में कानून और व्यवस्था की स्थिति को लेकर राजनीतिक घमासान चरम पर है। विपक्ष, खासकर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस, जहां नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार पर लगातार हमलावर है, वही एनडीए इन मुद्दों पर जबावी एवं रक्षात्मक हमला करते हुए चुनाव पर इनके असर को बेअसर करने में जुटी है। लालू यादव के शासनकाल के 'जंगलराज' की भी याद दिलाने की कोशिश एनडीए की पार्टियां कर रही है ताकि विपक्ष इन मामलों पर ज्यादा हावी ना हो। भाजपा के प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन का कहना है कि बिहार की जनता लालू राज में जो जंगलराज था, उसे भूली नहीं हैं। विपक्ष चाहे जो भी आरोप लगाए बिहार में आज सुशासन का राज है और जो घटनाएं हुई हैं वह योजनागत अपराध के तहत है, जिस पर सरकार कड़ी करवाई कर रही है।' हॉस्पिटल में जिसकी हत्या हुई, वह खुद हत्या के मामले में जेल में बंद था और फिलहाल पैरोल पर बाहर आया था। शुरुआती रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस वारदात में विरोधी गैंग शामिल हो सकता है। इसका मतलब कि राज्य में संगठित अपराध फिर सिर उठा रहा है। इसी महीने, 4 जुलाई को बिहार के बड़े व्यवसायी गोपाल खेमका की हत्या हुई थी और उसमें भी भाड़े के शूटर्स का इस्तेमाल किया गया था। ऐसी हत्याएं बार-बार हो रही हैं, यह सिलसिला कहीं रुकता नहीं दिख रहा।

पक्ष एवं विपक्ष के राजनीतिक दल एवं नेता चाहे जो बयान दें, लेकिन बिहार में अपराध तो बढ़ ही रहे हैं, आमजनता में भय एवं असुरक्षा व्याप्त है।। हाल ही में राजधानी पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, और गया जैसे प्रमुख शहरों में हुईं हत्या और डकैती की घटनाएं न केवल भयावह हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि अपराधी अब पुलिस और प्रशासन से नहीं डरते और पुलिस का अपराधियों पर नियंत्रण खत्म होता जा रहा है। सड़क पर चल रहे आम लोगों को दिनदहाड़े गोली मार दी जाती है, व्यापारियों से रंगदारी मांगी जाती है, महिलाओं के साथ दुष्कर्म की घटनाएं बढ़ रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि बिहार भले अपराध में कई दूसरे राज्यों से पीछे दिखता हो, लेकिन सच यही है कि आंकड़े पूरी कहानी नहीं बताते। राज्य में ये अपराध तब हो रहे हैं, जब पूरा फोकस क्राइम कंट्रोल पर है। बिहार में पिछले तीन वर्षों में अपराध दर में निरंतर वृद्धि हुई है। हत्या, बलात्कार, अपहरण, और लूट जैसे संगीन अपराधों में राज्य शीर्ष स्थानों में शामिल हो गया है। यह स्थिति न केवल चिंताजनक है, बल्कि चुनावी राजनीति में एक बड़ा मुद्दा बनकर उभर रही है।

एक समय था जब नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार ने कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर उल्लेखनीय सुधार किए थे। लालू-राबड़ी शासन के समय जिसे जंगलराज कहा जाता था, उसके मुकाबले एक उम्मीद जगी थी कि बिहार अब विकास, सुरक्षा और शांति की राह पर है। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में जनता फिर से असुरक्षा, भय और अराजकता के वातावरण में जीने को मजबूर है। इन स्थितियों में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब सरकार के पास प्रशासनिक अनुभव है, गठबंधन के रूप में राजनीतिक ताकत है, तो फिर अपराधियों पर लगाम क्यों नहीं लग पा रही है? बिहार में कानून एवं व्यवस्था के मुद्दे के साथ हमेशा राजनीति का पहलू जुड़ा रहा है। राज्य के लोगों के जहन में कई बुरी यादें हैं और राजनीतिक बाजीगरी में यह कोशिश होती है कि वे यादें कभी कमजोर न पड़ें। अभी तक इसका फायदा सीएम नीतीश कुमार को मिला है। नीतीश और भाजपा ने लालू-राबड़ी यादव के कार्यकाल को हमेशा 'जंगलराज' के तौर पर पेश किया। लेकिन, अब वही सवाल पलट कर उनकी ओर आ रहे हैं, जो आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर चिन्ता एवं चेतावनी का सबब बनना ही चाहिए।

बिहार की राजनीति में जातिगत समीकरण और गठबंधनों की जोड़तोड़ हमेशा से हावी रही है। लेकिन अब जो नया परिदृश्य बन रहा है, उसमें अपराध और अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण मिलने के आरोप भी आम हो गए हैं। हाल ही में कई मामलों में नेताओं और जनप्रतिनिधियों के आपराधिक तत्वों से संबंध उजागर हुए हैं। यह स्थिति न केवल लोकतंत्र के लिए खतरा है, बल्कि जनविश्वास की भी अवहेलना है। यदि अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण मिलेगा, तो फिर आम जनता के लिए न्याय और सुरक्षा केवल एक सपना बनकर रह जाएगा। हाल के अपराधों की घटनाओं ने विपक्ष को सरकार की नाकामी उजागर करने का मौका दिया है, जबकि भाजपा और जदयू रक्षात्मक रुख अपना रहे हैं और इन घटनाओं को योजनागत घटनाओं का नाम देकर राजद सरकार के समय की आपराधिक घटनाओं के साथ तुलना कर रहे हैं। मगर सूत्रों की माने तो पार्टी इस बात को लेकर तैयारी जरूर कर रही कि, यदि यह मुद्दा संसद के आगामी सत्र में विपक्ष उठाती है तो उस पर कैसे जवाब देना है? जिस बिहार के पूर्ववर्ती सरकारों के कानून एवं व्यवस्था की खराब स्थिति को मुख्य मुद्दा बनाकर एनडीए सरकार सत्ता में आई थी अब यही मुद्दा विपक्ष के हाथ लग गया है। बिहार की जनता बदलाव चाहती है। उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा जैसे बुनियादी मुद्दों पर ठोस कदम चाहिए, न कि केवल वादों की झड़ी। विपक्ष इस समय सरकार को घेरने के लिए पूरी तैयारी में है और 'बदहाल कानून-व्यवस्था' को मुख्य चुनावी मुद्दा बना रहा है।

आरजेडी-कांग्रेस भाजपा और नीतीश सरकार पर हमला बोल रहे हैं कि जिनके शासन में कभी सुशासन की मिसाल दी जाती थी, अब वही शासन अपराधियों के आगे बेबस नजर आ रहा है। बिहार के लिए यह समय आत्मचिंतन का है। सरकार को चाहिए कि वह पुलिस-प्रशासन को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दे, अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करे और राजनीतिक हस्तक्षेप को समाप्त करे। साथ ही न्यायिक प्रक्रिया को तेज़ किया जाए ताकि अपराधियों को जल्द सजा मिले। बिहार इस समय एक निर्णायक मोड़ पर है। अन्यथा एक ओर पुराना भयावह जंगलराज लौटने की आशंका है, दूसरी ओर एक सक्षम, उत्तरदायी और पारदर्शी प्रशासन की आवश्यकता। यदि वर्तमान सरकार इस संदेश को नहीं समझती, तो आगामी विधानसभा चुनाव बिहार की राजनीति का नया अध्याय लिख सकते हैं, जिसमें सुशासन नहीं, जनाक्रोश निर्णायक भूमिका निभाएगा। जनता के लिए भी यह चुनाव एक अवसर है कि वे विकास, सुरक्षा और पारदर्शिता के आधार पर अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करें, न कि जाति या चहेते दल के नाम पर।

जासूसी या कुछ और...! रात होते ही ड्रोन लगाने लगते हैं चक्कर, बिजनौर के आसमानी हलचल पर क्या बोले चश्मदीद?

आर्यावर्त संवाददाता

बिजनौर। उत्तर प्रदेश के बिजनौर के लगभग 20 गांवों में बीते चार-पांच दिनों से रात के समय रहस्यमयी ड्रोन देखे जाने से दहशत का माहौल है। गांववालों का दावा है कि ये ड्रोन रात 11 बजे से लेकर तड़के 2 बजे तक आसमान में उड़ते देखे गए हैं, जिनसे तेज रोशनी निकलती है। कोई इसे जासूसी बता रहा है तो कोई इसे चोरों की हरकत, लेकिन अभी तक ये गुत्थी सुलझ नहीं पाई है।

नूरपुर थाने के राजा का ताजपुर कस्बे में स्थित सरकारी प्राइमरी स्कूल के ऊपर शनिवार रात करीब 12 बजे एक ड्रोन काफी देर तक मंडराता रहा। स्थानीय निवासी अलीशा ने बताया कि स्कूल के ऊपर ड्रोन की फ्लैश लाइट इस तरह चमक रही थी जैसे कोई तस्वीरें खींची जा रही हों। इस दृश्य को देखकर लोग घबरा गए और बड़ी संख्या में सड़क पर निकल आए। सूचना पर फैंटम पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन ड्रोन का कुछ पता नहीं चल सका।

हीमपुर थाना क्षेत्र के धीवरपुरा गांव में पशु चिकित्सक डॉ। गुड्डू सिंह ने बताया कि रात 11 बजे से 12 बजे के बीच ड्रोन को गांव में अलग-अलग जगह उड़ते हुए देखा गया। ग्रामीणों ने डर के मारे उस पर पत्थर फेंके, लेकिन ऊंचाई ज्यादा होने के कारण वह बेअसर रहा। कई ग्रामीणों ने ड्रोन की वीडियो भी बनाई है, लेकिन उसके पीछे की मंशा अब तक स्पष्ट नहीं हो सकी है।

गलतफहमी में युवक से मारपीट

शिवाला कलां थाना क्षेत्र के मुराहट गांव में मध्य प्रदेश के एक व्यक्ति को भीड़ ने ड्रोन उड़ाने वाला समझकर पीट दिया। वह व्यक्ति मांगने खाने का काम करता है।

ग्रामीणों की आशंका सर्वे या जासूसी?

माहूं गंधोर गांव के संजय यादव को आशंका है कि या तो यह कोई सरकारी गुप्त सर्वे है, या फिर जासूसी की जा रही है। उन्होंने कहा कि अब तो राइफल से ड्रोन गिराकर उसकी असलियत सामने लानी चाहिए। लोगों में डर का माहौल है और पुलिस सिर्फ चक्कर लगाकर लौट रही है।

पुलिस की जांच जारी

ड्रोन देखे जाने की शिकायतें अब तक जिले के करीब 20 गांवों से पुलिस थानों में पहुंच चुकी हैं। चांदपुर सर्किल के सीओ देश दीपक सिंह ने बताया कि चार दिनों में करीब 1012 स्थानों से ड्रोन जैसी वस्तु उड़ने की सूचना मिली है। कुछ मामलों में यह सिर्फ हवाई जहाज की लाइट भी हो सकती है। फिर भी मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है।

क्या बोले एसएसपी?

बिजनौर के एसएसपी अभिषेक झा ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में जिले के अलग-अलग गांवों में ड्रोन उड़ने की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। जांच के लिए कई टीमें गठित की गई हैं। यदि कोई असामाजिक तत्व इस तरह की हरकत कर रहा है तो उसे बख्शा नहीं जाएगा। स्थानीय ड्रोन उपयोगकर्ताओं की भी जांच की जा रही है। साथ ही आमजन से अपील की गई है कि वे अफवाहों से बचें और ड्रोन दिखते ही 112 नंबर पर कॉल कर पुलिस को सूचना दें।

न0पा0अध्यक्ष नेतृत्व में शिव भक्तों पर नगर के सम्भ्रांतो ने पुष्प वर्षा

आर्यावर्त संवाददाता

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। पवित्र सावन माह के दूसरे सोमवार 21 को नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू की अगुवाई में भारत विकास परिषद छोटी काशी ,व्यापार मण्डल कंछल गुट ,पूर्व सैनिक सेवा परिषद और श्याम दीवाने सेवा समिति के पदाधिकारियों के साथ देवाधिदेव की उपासना एवं जलाभिषेक करने के लिए आए कांवरियों पर सदर चौराहे पर पुष्प वर्षा कर छोटी काशी गोला में स्वागत किया।

स्वागतोउपरांत नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने कहा कि देवाधिदेव महादेव के भक्तों के स्वागत करने के लिए सभी संगठनों का आभार व्यक्त करते है तथा नगर को स्वच्छ रखने में सहयोग की अपील करते है।

पुष्प वर्षा में श्री श्याम दिवाने सेवा समिति के अजय गुप्ता, अनिल जलोटा, सुमित राठौर, प्रवीन रस्तोगी, सौरभ सिंह, रजत देवल , भारत विकास परिषद के शैलेन्द्र सक्सेना, अनुज खरे ,मनोज वर्मा, द्वारिका प्रसाद रस्तोगी,संजय तिवारी,सुशील पटेल, संजय शुक्ला पूर्व सैनिक सेवा परिषद से राजेश्वर सिंह, महेश चन्द्र पाठक, इन्द्रपाल, के जी त्रिवेदी, अकरम खान, प्रेम कुमार, मिथलेश अवस्थी कुतुबुद्दीन अंसारी, जगदेव सिंह व्यापार मण्डल कंछल गुट के जिला अध्यक्ष नानक चन्द्र वर्मा, शिव गोपाल गुप्ता,प्रेम चन्द्र जायसवाल, राजेश गुप्ता, सचिन गुप्ता, संजय अवस्थी, पवन सेठी, गौरव मिश्रा,काके सहगल सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे।

कानपुर कमिश्नरेट के कई पुलिसकर्मी हो गए गायब! 'गुमशुदा' जवानों की जांच में जुटे अधिकारी

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। कानपुर कमिश्नरेट में कई पुलिसकर्मी ऐसे हैं जो सामान्य भाषा में 'लापता' हो गए हैं। दरअसल, यह सभी पुलिसकर्मी वो हैं जो किसी ना किसी कारण से छुट्टी पर गए थे और वापस नहीं आए। इन सबके खिलाफ प्रारंभिक जांच की जा रही है। बहुत से ऐसे पुलिसकर्मी होते हैं जिनके पास वापस नहीं आने के कई सही कारण भी होते हैं। फिलहाल सभी की जांच की जा रही है। ऐसे पुलिसकर्मियों की सही संख्या का पता फिलहाल नहीं चल है लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि ऐसी संख्या दर्जनों में हो सकती है। पुलिस के आलाधिकारियों ने पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है।

जब भी कोई पुलिस कर्मी छुट्टी पर जाता है तो जीडी में तस्करा डाल कर जाना होता है। उसके बाद जब वो छुट्टी से वापस आता है तो दोबारा तस्करा डालना पड़ता है। अगर वो वापस नहीं आते हैं तो उनको छुट्टी पर ही माना जाता है। कानपुर कमिश्नरेट में पुलिस लाइन और थाने स्तर पर बहुत से ऐसे पुलिसकर्मी हैं जो छुट्टी पर गए थे लेकिन अभी तक वापस नहीं आए हैं। ऐसे सभी पुलिस कर्मियों की प्रारंभिक जांच की जा रही है। पुलिसकर्मी कई कारण से छुट्टी पर जाते हैं जिसमें स्वास्थ, शादी, एक्सीडेंट समेत कई अन्य कारण हो सकते हैं। डीसीपी मुख्यालय कासिम आब्दी ने बताया कि यह प्रक्रिया तस्करा के आधार पर होती है। उन्होंने बताया कि ऐसे कई पुलिसकर्मियों के नाम जांच में आए हैं जिनकी प्रारंभिक जांच की जा रही है। कई बार उनके वापस नहीं आने के कई सही कारण भी होते हैं जैसे एक्सीडेंट या कुछ और।

अगर ऐसे कुछ कारण सामने आते हैं तो उनको समय दिया जाता है। अगर कोई गलत कारण बताता है तो उसको दंड भी दिया जाता है। उन्होंने बताया कि अभी ऐसे पुलिसकर्मियों की सही संख्या बताना संभव नहीं है क्योंकि सभी थानों से रिपोर्ट मंगवाई जा रही है। फिलहाल माना जा रहा है कि ऐसे पुलिसकर्मियों की संख्या दर्जनों में हो सकती है।

ग्राम मुझा खुर्द में राइस मिल की बिजली लाइन को लेकर लोगों में रोष

पूरनपुर (पीलीभीत)। तहसील क्षेत्र के ग्राम मुझा खुर्द में राइस मिल की बिजली लाइन को लेकर villagers में भारी आक्रोश व्याप्त है। ग्रामीणों का कहना है कि राइस मिल की 24 घंटे चालू रहने वाली बिजली लाइन गाँव के भीतर से निकाली जा रही है, जिससे गाँव की पहले से ही संकरी सड़क पर आवाजाही में बाधा उत्पन्न होगी।ग्रामीणों के मुताबिक गाँव की सड़क पहले ही तंग है और उस पर पहले से ही गांव की बिजली लाइन लगी हुई है। सड़क से आए दिन ट्रैक्टर-ट्रॉली, भूसी की ट्रैक, कंबाइन और डंपर जैसे भारी वाहन गुजरते रहते हैं, जिनसे कई बार खंभे और तारों के टूटने की घटनाएं हो चुकी हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यदि अब इसी रास्ते से दूसरी हाई पावर बिजली लाइन भी निकाली गई तो भविष्य में कोई बड़ी दुर्घटना घटित हो सकती है। इससे ग्रामीणों की जान-माल को खतरा बढ़ जाएगा।

अपनी ही गाड़ी से जाऊंगा... मेरठ में पुलिस से जमकर हुई भाजपा नेता संगीत सोम की झड़प

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम में पहले से पहुंचने के लिए बीजेपी नेताओं में होड़ लग गई। सरधना के पूर्व विधायक संगीत सोम और राज्यसभा सांसद लक्ष्मीकांत की गाड़ी को कांवड़ मार्ग में पुलिस द्वारा रोक दिया गया। जिसको लेकर बीजेपी नेताओं ने अधिकारियों को खूब खरी खोटी सुनाई और गाड़ी को उसी मार्ग से ले जाने पर अड़े रहे। हालांकि बाद में उन्हें अपना रास्ता बदलना पड़ा।

बीजेपी फायर ब्रांड नेता संगीत सोम ने रास्ते में अपनी गाड़ी रोके जाने पर अधिकारियों की क्लास लगाई। कार रोके जाने से नाराज दिखे सोम ने सीओ सिविल लाइन अभिषेक तिवारी को हड़काया। एसपी ट्रैफिक राघवेंद्र मिश्रा ने जब उनसे हाथ जोड़कर गाड़ी से उतरने को कहा तो वह नहीं माने और एसपी ट्रैफिक को भी हड़काया। एडीएम सिटी बृजेश सिंह ने भी जब सोम को समझाने का प्रयास किया तो उन्होंने उनकी भी क्लास लगाई। संगीत सोम बोले अपनी ही गाड़ी से जाऊंगा। मेरी कार नहीं लौटेगी। हालांकि कुछ देर बाद वह दूसरे रास्ते से सीएम के कार्यक्रम में पहुंचे। सीएम योगी के कार्यक्रम में जा रहे राज्यसभा सांसद लक्ष्मीकांत वाजपेयी की गाड़ी को भी पुलिस ने रोक दिया। जिसको लेकर राज्यसभा सांसद और पुलिसकर्मियों के बीच नोक झोंक हो गई। इस दौरान सांसद के अलग ही तेवर देखने को मिले। सांसद ने पुलिसकर्मियों से कहा कि तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। सांसद बोले अगर अपनी पर आया तो दिमाग सही कर दूंगा। सांसद उसी मार्ग पर जाने पर अड़े रहे और पुलिस ने सांसद की गाड़ी को मुख्य मार्ग से ही जाने दिया।

मथुरा की गलियों में सेफ नहीं लड़कियां : राह चलते छेड़छाड़ और ब्लेड से हमला, आरोपित युवक गिरफ्तार

आर्यावर्त संवाददाता

मथुरा। कोतवाली क्षेत्र के एक मुहल्ले में रविवार शाम उस समय अफरा तफरी मच गई, जब कुछ युवकों ने पहले गली में खड़े होकर नशेबाजी की, फिर एक किशोरी से छेड़छाड़ कर दी। विरोध करने पर न केवल गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी दी गई, बल्कि टोका-टोकी करने वाले युवक पर ब्लेड से हमला कर घायल कर दिया गया।

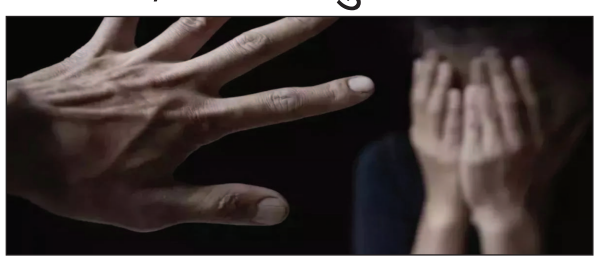

मौके पर भीड़ इकट्ठा हो गई। लोगों ने युवकों को पकड़ कर पुलिस के सिपुर्द किया है। इस संबंध में एक महिला ने दोनों नामजद युवकों के खिलाफ थाने में मुकदमा दर्ज कराया है।

गली में खड़े थे लड़के, निकलते ही छेड़खानी

कोतवाली क्षेत्र की पीड़िता ने बताया कि पिछले दो माह से रिहान निवासी अनार गली और शाकिर निवासी दरेसी रोड मुहल्ले में आकर नशेबाजी करते हैं और निकलने वाली लड़कियों से अश्लील हरकतें करते हैं। रविवार शाम छह बजे दोनों युवक अन्य लड़कों के साथ गली में खड़े थे। इसी दौरान उनकी बेटी वहां से निकली तो आरोपितों ने उससे छेड़खानी शुरू कर दी।

जान से मारने की धमकी दी

बेटी ने विरोध किया तो युवकों ने गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी दी। शोर सुनकर युवक तरुण उन्हें रोकने आया तो रिहान ने ब्लेड से उस पर हमला कर दिया। इससे वह घायल हो गया। आसपास के लोगों ने हमलावरों को पकड़कर लिया और चौकी लाकर पुलिस के सिपुर्द के दिया।

जेल भी जा चुके हैं आरोपित

पीड़िता ने बताया कि ये लड़के पहले भी आपराधिक गतिविधियों में शामिल रहे हैं और कई बार जेल जा चुके हैं। पीड़िता ने कोतवाली थाने में दोनों नामजद युवकों के खिलाफ प्रार्थना पत्र दिया है। कोतवाल देवपाल सिंह पुंडीर ने बताया कि मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी है।

लगभग डेढ़ हजार उपभोक्ताओं को शुद्ध नही मिल पा रहा शुद्ध पेयजल

तिकुनियां-खीरी। जल निगम की लापरवाही के चलते ग्राम सभा के करीब डेढ़ हजार उपभोक्ताओं को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है जिससे जनता में रोष बना हुआ है, जबकि लोकनिर्माण विभाग ने कई माह पूर्व जल निगम को पाइपलाइन शिफ्टिंग के लिए पत्र जारी कर योजना से अवगत करा दिया था। ग्राम सभा सुथना बरसोला में बने ओवर हेड टैंक से करीब डेढ़ हजार घरों को शुद्ध पेयजल की सप्लाई बीते कई वर्षों से दी जा रही है। कालेसरण से बाबापुरवा तक सड़क के चौड़ीकरण का कार्य प्रगति पर है जिसकी लंबाई करीब 10 किलोमीटर है कार्य के दौरान जेसीबी द्वारा कस्बे के कई स्थानों पर पेयजल सप्लाई पाइप टूट गए हैं। तराई क्षेत्र के जल में आर्सेनिक की मात्रा अधिक होने के चलते सरकार ने शुद्ध पेयजल की व्यवस्था ओवर हेड टैंक के माध्यम से गांव गांव की थी जिससे लोगों को शुद्ध पेयजल मुहैया हो रहा था और तराई क्षेत्र में बीमारियों में भी कमी आई थी।

8 साल की उम्र में तीन बच्चों की मां औरैया में कैसे हो गया ये?

आर्यावर्त संवाददाता

औरैया. उत्तर प्रदेश के औरैया जिले की अजीतमल तहसील के रामपुर गांव में दस्तावेजों की गड़बड़ी ने प्रशासन को हैरानी में डाल दिया है। यहां जन्म-तिथि और पारिवारिक विवरणों में ऐसे झोल सामने आए हैं, जो किसी मज़ाक या फिल्मी कहानी जैसे लगते हैं, लेकिन असल में सरकारी रिकॉर्ड का हिस्सा हैं।

मामला एक महिला और उसके बच्चों से जुड़ा है। पंचायत सचिव द्वारा हस्ताक्षरित परिवार रजिस्टर की नकल के अनुसार, एक महिला ने 5 वर्ष की उम्र में पहले बच्चे को जन्म दिया, 6 वर्ष की उम्र में दूसरा और महज 8 साल की उम्र में तीसरे बच्चे की मां बन गई।

महिला का नाम कमलेश है। उसका आरोप है कि उसके मृत पति के नाम पर किसी दूसरी महिला को पत्नी दिखा दिया गया है और उसके नाम से तीन बच्चों को जोड़ा गया है। कमलेश का कहना है कि उसके ससुराल वालों ने संपत्ति हथियाने की नीयत से रिकॉर्ड में हेरफेर करवाई है। इस संबंध में उसने समाधान दिवस में 12 लोगों के खिलाफ शिकायत पत्र भी सौंपा है। उसने पुलिस से आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है।

पंचायत सचिव की भूमिका पर भी सवाल

हैरानी की बात यह है कि फर्जी महिला की जन्मतिथि 1984 दर्शाई गई है, जबकि उसके बच्चों की जन्म तिथियां 1989, 1990 और 1792 दर्ज हैं। ये तिथियां सरकारी दस्तावेज़ों की विश्वसनीयता पर बड़ा सवाल खड़ा करती हैं। ऐसे आंकड़े किसी कॉमिक किताब की पटकथा में भले चलें, लेकिन सरकारी रजिस्टर में? सवाल उठना लाज़मी है। अब यह मामला पंचायत सचिव की भूमिका और रिकॉर्ड-रखरखाव प्रणाली की पारदर्शिता पर भी प्रश्न खड़ा करता है।

खंड विकास अधिकारी (BDO) ने इस मामले की पुष्टि करते हुए कहा है कि उच्च अधिकारियों के निर्देश पर विस्तृत जांच शुरू की गई है। अगर आरोप सही साबित होते हैं, तो यह केवल एक महिला की पहचान से छेड़छाड़ का मामला नहीं रहेगा, बल्कि यह पूरे प्रशासनिक ढांचे की साख पर सवालिया निशान बन जाएगा।

...तो बन जातीं आतंकी, लड़कियों को बचाया भी, गुनहगारों को दबोचा भी

आर्यावर्त संवाददाता

आगरा। उत्तर प्रदेश के आगरा की दो लड़कियों के अवैध धर्मांतरण मामले में हर दिन नए-नए खुलासे हो रहे हैं। दो सगी पढ़ी-लिखी पंजाबी बहनों का धर्मांतरण करा कर उनका ब्रेनवॉश किया गया, लेकिन इससे पहले कि वह आतंकवाद के रास्ते पर निकलतीं, पुलिस ने दोनों बहनों को कोलकाता से रेस्क्यू कर लिया। पुलिस ने देश के अलग-अलग 6 राज्यों से कुल 11 आरोपियों को गिरफ्तार कर धर्मांतरण के एक बड़े रैकेट का खुलासा किया है, जिनके तार लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ रहे हैं।

धर्मांतरण करने वाला यह गिरोह IS के तर्ज पर काम कर रहा था। धर्मांतरण के बाद लड़कियों को कट्टरपंथी वीडियो दिखाकर आत्मघाती हमले के लिए तैयार किया जा रहा था। इस गिरोह का शिकार हुई एक पंजाबी लड़की ने अपना धर्म परिवर्तन करने के बाद फेसबुक पर AK-47 राइफल के साथ अपनी प्रोफाइल फोटो भी अपलोड की थी। आगरा पुलिस ने विदेशी फंडिंग की रकम से कम उम्र की हिंदू लड़कियों को धर्मांतरण करने वाले 11 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इन आरोपियों को आगरा, मुजफ्फरनगर, गोवा, कोलकाता, देहरादून, जयपुर और दिल्ली से पकड़ा गया है।

कोलकाता से रेस्क्यू कराई गई इन दोनों पढ़ी-लिखी बहनों का इस कदर ब्रेनवॉश किया गया था कि वे आगरा में अपना घर मार्च 2025 में छोड़कर सड़क के रास्ते कई बसें बदलती हुई कोलकाता पहुंच गईं। वहां की मुस्लिम बस्ती बकरमहल में दोनों को रखा गया। इन दोनों पंजाबी बहनों का नाम बदलकर अमीना और जोया कर दिया गया। जिस घर में इनको रखा गया, वहां उनके साथ दो मुस्लिम शख्स भी रह रहे थे। गुरुवार को आगरा पुलिस की टीम कोलकाता पुलिस के साथ जब पहुंची तो दोनों बहनों ने बुर्का पहन रखा था।

जूता कारोबारी की दो बेटियां अचानक हो गई थीं गायब

24 मार्च 2025 को आगरा के एक जूता कारोबारी की दो बेटियां अचानक लापता हो गई थीं। बड़ी बेटी एम। फिल कर चुकी थी और 18 साल की छोटी बेटी ग्रेजुएशन कर रही थी। पुलिस में इन दोनों की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। आगरा की साइबर क्राइम थाना पुलिस इस मामले की जांच कर रही थी।

जूता कारोबारी ने पुलिस को बताया कि पढ़ाई के दौरान उसकी बड़ी बेटी 2020 में उधमपुर की रहने वाली समा के संपर्क में आई। 2021 में समा बिना बताए उसे अपने साथ उधमपुर और कश्मीर ले गई। जम्मू-कश्मीर पुलिस की मदद से जूता कारोबारी अपनी बेटी को वापस ले आए थे। लेकिन इसके बावजूद उनकी बेटी की बातचीत समा से फोन पर लगातार होती थी। घर लौटने के बाद बड़ी बेटी अपनी छोटी बहन को लगातार इस्लाम धर्म कबूलने के लिए दबाव बना रही थी। उसे इस्लाम की तरफ झुकाव कर रही थी। इसके बाद 24 मार्च को दोनों बेटियां घर से निकल गईं और फिर वापस नहीं लौटीं। दोनों बहनों की खोज के दौरान पुलिस को इस बड़े धर्मांतरण सिंडिकेट के सुराग मिले थे। जांच के दौरान पता चला कि इस गिरोह को कनाडा-अमेरिका से फंडिंग भी कराई जा रही थी। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के नाम अबू तालिब, अब्दुल रहमान, मोहम्मद इब्राहिम, अली हसन, मुस्तफा उर्फ मनोज, जुनैद कुरैशी, रहमान कुरेशी, मोहम्मद अली, आयशा और ओसामा हैं।

अपहरण में समा के नामजद होने के बाद जांच में पुलिस को जूता कारोबारी की बड़ी बेटी, जिसकी उम्र 33 साल है, उसके बदले हुए नाम से एक फेसबुक आईडी मिली। उसने बुर्के में AK-47 के साथ अपनी फोटो लगा रखी थी। दोनों बहनों की लोकेशन कोलकाता के बकरमहल में मिली। पुलिस ने उनको जब पकड़ा तो दोनों बुर्के में थीं और दो मुस्लिम शख्स भी उनके साथ वहां रहते थे।

साइबर थाना पुलिस को छोटी बहन के मोबाइल से चैट भी मिली है। उसमें जिक्र है कि वह मुजाहिद बनना चाहती है। इस्लाम के लिए खुद को कुर्बान करना चाहती है। दोनों लड़कियों की काउंसिलिंग कराई जा रही है।

अली नाम का आरोपी है। यह हिंदू राजपूत था। जयपुर में इसने इस्लाम कबूला। एक मुस्लिम लड़की से इश्क था। कन्वर्ट होने वालों को यह लीगल गाइड करता था।

रहमान कुरेशी – यूट्यूब चैनल चलाता है। ब्रेनवॉश करता है, इन दोनों बहनों के संपर्क में था। आगरा का रहने वाला है।

अब्दुर्रहमान – यह भी कन्वर्टेड है। उत्तरांचल इसका एरिया था। हिंदू लड़कियों को टारगेट करके उनका मुस्लिम से शादी कराता था।

मुहम्मद इब्राहिम – यह भी कन्वर्टेड है। रितबानिक इसका असली नाम है। यही दोनों लड़कियों को कोलकाता ले गया था। इसका काम फाइनेंस का था।

अली हसन – कोर्ट का कर्मचारी है। गोवा वाली आयशा का पति है। बंगाल में कर्मचारी है। शेखर रॉय असली नाम है। यह भी कन्वर्टेड मुस्लिम है। लीगल मदद करता था।

आयशा – गोवा वाली आयशा सबको फंड देती थी। आयशा को कनाडा का रहने वाला दाऊद फंड देता था।

पुलिस ने जो 11 आरोपी गिरफ्तार किए हैं, उनमें से 6 आरोपी कन्वर्टेड हैं:

एसबी कृष्णा उर्फ आयशा

शेखर रॉय उर्फ हसन अली

ऋतिक बनिक उर्फ मोहम्मद इब्राहिम

रूपेंद्र सिंह उर्फ अब्दुर्रहमान

मोहम्मद अली उर्फ पीयूष पवार

मनोज उर्फ मुस्तफा

इसके साथ ही आगरा पुलिस ने दिल्ली के मुस्तफाबाद से एक मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। आगरा से गायब हुई कारोबारी की बेटियों का धर्मांतरण और उनको वेस्ट बंगाल भेजने में अहम भूमिका थी।

पुलिस ने इस पूरे ऑपरेशन को बहुत ही गोपनीय रखा था। बंगाल में समुदाय विशेष बाहुल्य इलाके में लड़कियों को रखा गया था, जहां से उन लड़कियों को निकालना पुलिस के लिए एक मुश्किल टास्क था। 4 मई को इस मामले में FIR दर्ज करने के 15 दिन बाद पुलिस को दोनों लड़कियों की लोकेशन मिल गई थी। इस ऑपरेशन में 50 पुलिसकर्मी मौजूद थे, जिनकी बाकायदा प्रोफाइलिंग की गई और फिर उन्हें इसके लिए चुना गया।

पिछले 7 दिन से पुलिस की टीम बंगाल में लड़कियों की लोकेशन पर थी। पुलिस की टीम रेकी करने के लिए पहुंची थी, जो पूरी तरह टेक्निकल साउंड थी। कुछ पुलिसकर्मी पत्रकार और अन्य पेशेवर बनकर भी रहे, ताकि इस रैकेट को चलाने वालों को भनक न लगे। यह पूरा ऑपरेशन इतना गुप्त रखा गया कि पुलिस की एक टीम, दूसरी टीम को नहीं जानती थी। आखिरी वक्त तक नहीं बताया गया था कि कौन कहां जाएगा। जिस वक्त लड़कियों को बरामद किया गया, उस समय पुलिस की महिला अधिकारियों के साथ लड़की के माता-पिता भी मौजूद थे। फिलहाल यूपी एटीएस और एसटीएफ भी इस धर्मांतरण रैकेट की जांच कर रहे हैं।

कितना हेल्दी है आपका रिलेशनशिप?

हर कोई अपने रिश्ते को लेकर इस गुमान में रहता है कि मैं एक हेल्दी रिलेशनशिप में हूं, लेकिन कभी-कभी ये गुमान भ्रम भी निकलता है। ऐसे में आपके मन में भी ये कौतुहल होगा कि मैं कैसे पता करूं कि मेरा रिश्ते हेल्दी है या नही। इसके लिए आप खुद से या पार्टनर से ये कुछ सवाल पूछ सकते हैं।

किसी भी रिश्ते की मजबूती इस बात पर निर्भर करती है कि वो कितना हेल्दी है। एक हेल्दी रिलेशनशिप वो होता है जिसमें दोनों पार्टनर एक-दूसरे के साथ खुश, सेफ और सम्मानित महसूस करते हैं। लेकिन आज के समय में यही जानना सबसे ज्यादा मुश्किल होता है कि जिस रिश्ते में हम हैं, क्या वो स्वस्थ है या नहीं।

कभी-कभी कपल को लगता है कि उनका रिलेशनशिप हेल्दी चल रहा है, लेकिन दोनों का अपने-अपने मन में ऐसा सोचना कब रिश्ते को खराब कर देता है, ये पता लगा पाना कोई आसान काम नहीं है। इसलिए आज हम आपको इस लेख में कुछ सवालों के बारे में बताने वाले हैं, जिन्हें खुद से या अपने पार्टनर को पूछकर इस बात का अंदाजा लगा सकती हैं कि आपका रिलेशन हेल्दी है या नहीं।

क्या आप एक-दूसरे के साथ खुलकर बात करते हैं?

भले ही आपके और पार्टनर के बीच लड़ाई न होती हो, लेकिन इसका मतलब ये कतई नहीं है कि आपका रिलेशनशिप हेल्दी है। इस बात का पता लगाने के लिए खुद से या फिर अपने पार्टनर से ये सवाल करें कि क्या आप दोनों जब भी साथ होते हैं, तो एक-दूसरे से खुलकर बात करते हैं?

किसी भी रिश्ते की सफलता के लिए खुलकर और स्पष्ट रूप से किया गया संवाद सबसे ज्यादा जरूरी होता है। अगर आप अपने पार्टनर से अपनी भावनाओं, विचारों और परेशानियों को बिना किसी डर और हिचकिचाहट के शेयर करते हैं और आपका पार्टनर भी आपकी बातों को ध्यान से सुनता है और आपको समझने की कोशिश करता है, तो यह कहना गलत नहीं होता कि आप हेल्दी रिलेशनशिप में हैं।

क्या आप एक-दूसरे के साथ खुश रहते हैं?

कभी-कभी ऐसा होता है कि हम अपने पार्टनर के साथ हंस तो रहे होते हैं, लेकिन वो खुशी सिर्फ चेहरे तक ही सीमित रह जाती है और हम दिल से खुश नहीं होते हैं। किसी भी रिश्ते का मकसद होता है एक दूसरे को खुश रखना और सभी सेटिस्फेक्शन को पूरा करना। अगर आप अपने पार्टनर के साथ समय बिताते वक्त खुश रहने के साथ-साथ एक-दूसरे की कंपनी को कंफर्ट और सेफ्टी के साथ एंजॉय करते हैं तो आप एक हेल्दी रिलेशनशिप में हैं।

क्या आप एक-दूसरे के लिए सैक्रिफाइस करते हैं?

किसी भी रिश्ते में एक न एक बार ऐसा समय जरूर आता है, जब वो टूटने की कगार पर आ जाता है। या दोनों के बीच ऐसी उलझनें पैदा हो जाती हैं जो रिश्ते में दरार लाने का काम करती हैं। ऐसे में ये देखें कि आपका पार्टनर रिश्ते को ठीक करने और आपसे बात करने के लिए कितनी कोशिशें कर रहा है।

किसी भी रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए समर्पण जरूरी होता है। अगर आप दोनों में से एक भी अपने रिश्ते को बनाए रखने के लिए प्रयास करने को तैयार रहते हैं या मुश्किल समय में भी एक-दूसरे का साथ देने के लिए खड़े रहते हैं तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि आपका रिश्ता स्वस्थ है, यानी की आपका रिलेशनशिप हेल्दी रिलेशनशिप है।

क्या आप एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करते हैं?

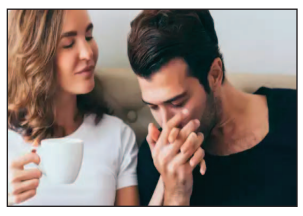

हेल्दी रिलेशनशिप तभी हेल्दी होता है जब एक-दूसरे का साथ देने के साथ-साथ हम अपने पार्टनर की सैक्सुअल नीड्स को भी पूरा करते हैं। ये बात कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होता कि दो लोगों के बीच अच्छा रिश्ता होने के बावजूद भी अगर उनके बीच एक अच्छा सेक्सुअल रिलेशन नहीं होता है, तो वो हेल्दी रिलेशनशिप नहीं कहलाता है। इसलिए अपने रिश्ते में इस बात पर भी गौर करें कि क्या आप दोनों एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करते हैं और इस बारे में पार्टनर से खुलकर बात करते हैं। अगर ऐसा नहीं है तो फिर इस टॉपिक पर पार्टनर से खुलकर बात करें और रिलेशनशिप को हल्दी बनाएं।

क्या आप एक-दूसरे के सपनों को सपोर्ट करते हैं?

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज के दौर में कपल एक दूसरे के सपनों को पूरा करने में पूरा सपोर्ट कर रहे हैं। लेकिन अपने पार्टनर के ड्रीम्स को ध्यान में रखकर आगे फ्यूचर की प्लानिंग करना एक किसी भी रिश्ते के लिए ग्रीन फ्लैग होता है, जो रिलेशनशिप को हेल्दी बनाने के लिए सबसे बड़ा प्लस पोइंट है। अगर आप या आपका पार्टनर आपका साथी रिश्ते, सपनों और भविष्य एक अच्छे भविष्य के लिए दोनों की जरूरतों को देखते हैं तो यकीनन आप एक हेल्दी रिलेशनशिप में हैं।

इन 5 सब्जियों से करें तौबा, अच्छे-खासे इंसान की किडनी में बना देती हैं पथरी, 99% लोग खाते हैं दूसरी सब्जी

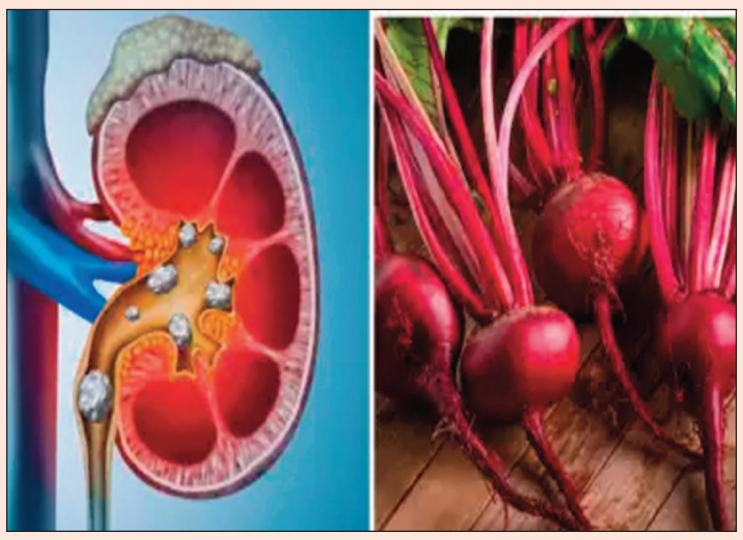

अगर आपको किडनी की पथरी से बचना है या फिर आप पहले से पीड़ित हैं, तो आपको इन सब्जियों के अधिक सेवन से बचना चाहिए क्योंकि इनमें ऑक्सालेट की अधिक मात्रा होती है, जो पथरी बनाने में देर नहीं करता।

किडनी की पथरी एक आम समस्या है जिससे अक्सर बहुत से लोग पीड़ति रहते हैं। किडनी में पथरी बनने के कई कारण हैं जिनमें एक कैल्शियम ऑक्सालेट भी है। ऑक्सालेट एक ऐसा पदार्थ है जो लीवर द्वारा बनता है। यह रोजाना खाई जाने वाले फल-सब्जियों सहित कई कई खाद्य पदार्थों में पाया जाता है।

कैल्शियम ऑक्सालेट किडनी की पथरी का सबसे आम प्रकार है। जब पेशाब में कैल्शियम ऑक्सालेट का लेवल बहुत अधिक हो जाता है, तो पथरी बन सकती है। खाने के बाद शरीर के भीतर बच हुए अपशिष्ट पदार्थ खून के रास्ते किडनी तक जाते हैं और वहां से पेशाब के जरिए शरीर से बाहर निकल जाते हैं। पेशाब में कई तरह के अपशिष्ट पदार्थ होते हैं जिनमें ऑक्सालेट भी है। ऑक्सालेट एक ऐसा पदार्थ है जो पेशाब में क्रिस्टल बना सकता है और पथरी का रूप ले सकता है।

अगर आपको किडनी की पथरी से बचना है या फिर आपको किडनी में पथरी है, तो आपको ऐसे खाद्य पदार्थों को खाने से बचना चाहिए जिनमें ऑक्सालेट की मात्रा अधिक होती है। मेडिकल कॉलेज ऑफ विस्कॉन्सिन (MCW) ने कुछ ऐसी सब्जियों के बारे में बताया है, जिनमें ऑक्सालेट की अधिक मात्रा होती है। किडनी के मरीजों को हर हाल में इनके सेवन से बचना चाहिए।

शतावरी

शतावरी को एक औषधीय सब्जी माना जाता है और इसका आयुर्वेद में भी कई विकारों के लिए इलाज में इस्तेमाल किया जाता है। अगर आपको किडनी की पथरी है, तो आपको इसके सेवन से बचना चाहिए। इसकी 100 ग्राम मात्रा में 5.12 मिलीग्राम ऑक्सालेट होता है।

आलू

एक आलू में करीब 97 मिलीग्राम ऑक्सालेट होता है। ज्यादातर ऑक्सालेट आलू के छिलके में होता है, हालांकि आलू के छिलके में फाइबर, विटामिन सी और बी विटामिन जैसे पोषक तत्व भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

ग्रीन बीन्स

ग्रीन बीन्स विभिन्न पोषक तत्वों जैसे में प्रोटीन, विटामिन और कैल्शियम आदि से भरपूर सब्जी है। इसके सेवन से दिल को स्वस्थ रखने में भी मदद मिलती है मगर किडनी के मरीजों को इससे बचना चाहिए क्योंकि इसकी 100 ग्राम मात्रा में 15 मिलीग्राम ऑक्सालेट होता है।

चुकंदर

चुकंदर की सब्जी का सब्जी बनाने और जूस और सलाद में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें आयरन, विटामिन और मिनरल्स अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं लेकिन इसमें ऑक्सालेट की मात्रा भी ज्यादा होती है। 100 ग्राम उबले चुकंदर में 675 मिलीग्राम ऑक्सालेट होता है।

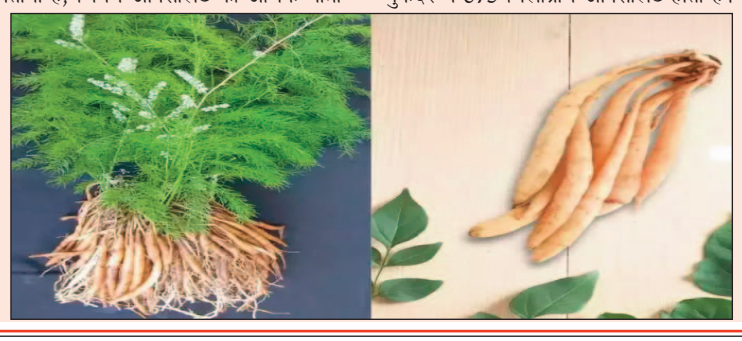

जरा-जरा सी बात पर तिलमिला उठते हैं आप, तो खुद को करें कंट्रोल, वरना ब्लड वेसल्स होंगी खराब

अगर आप भी गुस्से में आग बबूला हो जाते हैं, तो इसे कंट्रोल करना सीख लें। एक स्टडी के अनुसार कुछ सेकंड का गुस्सा भी आपकी ब्लड वेसेल्स को नुकसान पहुंचा सकता है। जिससे आगे चलकर हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा भी बढ़ाता है।

गुस्सा किसे नहीं आता। कुछ लोग तो छोटी छोटी बात पर तिलमिला उठते हैं। जब आप गुस्से में होते हैं, तो दिमाग स्ट्रेस से भर जाता है और कोई भी काम करने की क्षमता कम हो जाती है। इसके कारण करीबी रिश्तों के साथ ही सेहत पर भी बुरा असर पड़ता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कुछ सैकंड का गुस्सा भी आप दिल के लिए नुकसानदायक है।

आपने यह तो सुना ही होगा कि गुस्सा रग रग में बहता है। यह बात एकदम सच है। अमेरिकन हार्ट असोसिएशन में पब्लिश एक स्टडी के अनुसार, कुछ देर का गुस्सा भी आपकी ब्लड वेसेल्स को प्रभावित करता है। जानते हैं कैसे।

निगेटिव फीलिंग बढ़ाती हैं हार्ट अटैक का खतरा

स्टडी में पाया गया है कि जब लोग खुद से जुड़ी किसी पुरानी बात को याद करते हैं, तो उन्हें बहुत गुस्सा आता है। इसका असर उनके हृदय पर भी पड़ता है। यानी की जब आप किसी भी तरह से गुस्सा करते हैं , तो आपकी ब्लड वेसेल्स काम करना बंद कर देती हैं। इस स्थिति में हृदय पर दबाव पड़ता है , जिससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है।

ऐसे हुई स्टडी

स्टडी में 280 प्रतिभागियों को शामिल किया गया था। इसमें उन्हें किसी एक पर्सनल मेमोरी को याद करना था, जिससे उन्हें गुस्सा आए या फिर एक ऐसी सीरीज पढ़नी थी, जो उन्हें उदास करे। इस बीच रिसर्चर्स ने इन लोगों की ब्लड वेसेल्स सेल्स को नोटिस किया, ताकि जाना जा सके कि एक नेगेटिव फीलिंग ब्लड वेसेल्स को किस तरह प्रभावित करती है। उन्होंने पाया कि गुस्से के कारण ब्लड वेसेल को फैलने में 40 मिनट का समय लगता है। जबकि जिन लोगों में चिंता और उदासी थी, उनमें ऐसा कोई बदलाव नहीं देखा गया।

40 मिनट दे सकते हैं लंबी समस्या

रिसर्चर्स के अनुसार, ये 40 मिनट एक बड़ी समस्या में बदल सकते हैं। रिसर्चर्स ने पाया कि गुस्से के कारण ब्लड वेसेल्स संकुचित हो जाती हैं और ठीक से फैल नहीं पातीं। बता दें कि सिकुड़ी हुई ब्लड वेसेल्स के कारण शरीर के हर अंग में ब्लड सर्कुलेशन कम हो जाता है, जिसका असर सबसे पहले हृदय पर पड़ता है।

गुस्से को कंट्रोल करने के तरीके

- गुस्सा आने पर अपना ध्यान भटकाएं।
- रिवर्स काउंटिंग करना शुरू कर दें।
- अगर आप किसी से गुस्सा हैं, तो बोलने से पहले दो बार सोच लें।
- एक्सरसाइज कर सकते हैं।
- अपने विचारों को एक डायरी में लिखना शुरू करें।

हवाई उड़ान में सामान गुम हो जाने पर पा सकते हैं मुआवजा

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की धारा 2(11) ₹कमी' को परिभाषित करती है और इस परिभाषा में ₹लापरवाही या चूक या ऐसा कार्य जिसके करने से उपभोक्ता को नुकसान या चोट पहुंचती है', शामिल होता है। विमानन उद्योग में ऐसी कमियां अक्सर होती रहती हैं और इसको लेकर कई बार उपभोक्ताओं ने एयरलाइनों को आड़े हाथ लिया है। पिछले अंक में हमने बताया था कि किसी एयरलाइन द्वारा बोर्डिंग से इनकार करने और फ्लाइट के रद्द होने पर यात्री के क्या अधिकार हो सकते हैं और वे किस तरह से मुआवजे के लिए दावा कर सकते हैं। इस बार के अंक में हम हवाई यात्रियों के कुछ और अधिकारों की बात करेंगे।

व्हीलचेयर से इनकार करने पर दिव्यांग और/या कम गतिशीलता वाले व्यक्तियों के लिए नागरिक विमानन महानिदेशालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार एयरलाइनों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि व्हीलचेयर की जरूरत वाले यात्रियों को प्रस्थान टर्मिनल से विमान तक और यात्रा के अंत में विमान से आगमन टर्मिनल निकास तक बिना किसी अतिरिक्त खर्च के निर्बाध यात्रा मिले। साल 2019 में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीआरडीसी) ने एक वरिष्ठ नागरिक दंपती को 5 लाख रुपए का मुआवजा दने का आदेश पारित किया था, जिनकी सीट बदल दी गई थी और उन्हें व्हीलचेयर उपलब्ध नहीं कराई गई थी। हाल ही में डीजीसीए ने एयर इंडिया पर 30 लाख रुपए का जुर्माना लगाया, क्योंकि वह 80 वर्षीय एक यात्री को व्हीलचेयर उपलब्ध कराने में विफल रहा था। इस वजह से उसे विमान से टर्मिनल तक पैदल चलना पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई थी।

सामान गुम हो जाने पर अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में सामान के खो जाने के मामलों में मॉन्ट्रियल कन्वेंशन के तहत कार्रवाई की जाती है। घरेलू उड़ानों में यह कैरिज बाय एयर एक्ट, 1972 के तहत संचालित होता है। दोनों ही स्थितियों में एयरलाइंस की जिम्मेदारी सीमित होती है। इसलिए विदेश यात्रा करते समय यात्रा बीमा लेना बेहतर है। आमतौर पर जब सामान गंतव्य एयरपोर्ट पर नहीं पहुंचता है तो एयरलाइंस उसे अगली उपलब्ध फ्लाइट के माध्यम से यात्री के पते पर पहुंचा देती हैं। हालांकि अगर सामान का पता नहीं चल पाता है या वह गुम जाता है तो उपभोक्ता को एयरलाइन से मुआवजा मिल सकता है। जुलाई 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने एनसीडीआरसी के उस फैसले को बरकरार रखा, जिसमें एयर इंडिया द्वारा एक यात्री का सामान खोने पर 2.03 लाख रुपए का मुआवजा देने का आदेश दिया गया था। इस मामले में यात्री ने सामान की शॉपिंग रसीदें दिखाई थीं, क्योंकि वह एक शादी में शामिल होने के लिए यात्रा कर रहा था। हालांकि इससे पहले एयरलाइन ने उसे नियमों के तहत महज 3,600 रुपए का मुआवजा देने की पेशकश की थी।

तकनीकी कारणों का बहाना 'तकनीकी कारणों से उड़ान में देरी हो गई', विमानन उद्योग में इस तरह के बहाने आम हैं। एयरलाइंस कंपनी शायद ही कभी बताती है कि वे तकनीकी कारण क्या हैं। जब एक एयरलाइन पर फ्लाइट में देरी, जिसके कारण कनेक्टिंग फ्लाइट छूट गई थी, की वजह से मुकदमा किया गया तो एयरलाइन ने देरी के लिए 'तकनीकी कारण' को जिम्मेदार ठहराया। एनसीडीआरसी ने माना कि हवाई अड्डों पर प्रतीक्षा कर रहे यात्रियों के समक्ष देरी और डायवर्जन के लिए तकनीकी कारणों का हवाला देना आम हो सकता है, लेकिन अगर कोई एयरलाइन कंपनी किसी उपभोक्ता अदालत में उपस्थित हो रही है तो उसे 'तकनीकी कारण' जैसा सामान्यीकृत बयान देने के बजाय ऐसे कारणों का विस्तृत विवरण देना चाहिए। इसने स्पष्ट रूप से कहा कि एयरलाइनें तकनीकी वजहों की आड़ में अपनी अक्षमताएं नहीं छिपा सकतीं। एयरलाइन्स उन फंसे हुए यात्रियों की देखभाल करने के लिए बाध्य हैं, जो देरी के कारण कनेक्टिंग फ्लाइट से चूक गए हैं, और तदनुसार आयोग ने मुआवजा देने का आदेश दिया।

गेट पर न आने पर बोर्डिंग पास जारी होने के बाद यात्रियों से बोर्डिंग गेट की ओर बढ़ने और बोर्डिंग गेट बंद होने से पहले रिपोर्ट करने की अपेक्षा की जाती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर कोई यात्री बोर्डिंग पास जारी होने के बाद बोर्डिंग से चूक जाता है तो इसकी जिम्मेदारी एयरलाइनों की नहीं है। एनसीडीआरसी ने एक अलग फैसले में स्पष्ट किया है कि ऐसी परिस्थितियों में एयरलाइन को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

क्रिप्टो मार्केट ने पहली बार छुआ चार ट्रिलियन डॉलर का आंकड़ा, ट्रंप सरकार की नीतियों से मिली रफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। क्रिप्टो सेक्टर का बाजार मूल्य शुक्रवार को लगभग चार ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच गया। क्रिप्टोकरेंसी डेटा एग्रीगेटर कोइनगेको के जारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। यह आंकड़ा क्रिप्टो सेक्टर के लिए एक मिल का पत्थर है। प्रमुख बाजारों में नियामकीय स्पष्टता, निवेशकों के विश्वास में बढ़ोतरी और संस्थागत निवेश के मजबूत प्रवाह ने इस उद्योग को नई बुलंदियों पर पहुंचा दिया है।

अमेरिका ला रहा क्रिप्टो के लिए नियम

अमेरिकी हाउस ऑफ रेप्रेसेंटेटिव ने गुरुवार को अमेरिकी डॉलर से जुड़ी क्रिप्टोकरेंसी टोकन के लिए एक नियामक ढांचा बनाने के लिए विधेयक पारित किया। इस क्रिप्टोकरेंसी को स्टेबलकॉइन के रूप में जाना जाता है। फिलहाल विधेयक को राष्ट्रपति ट्रंप के पास भेज दिया गया है। इस पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होने के बाद यह कानून बन जाएगा।

हार्ग्रेव्य लैंसडाउन के इक्विटी रिसर्च प्रमुख डेरेन नाथन ने कहा कि ट्रंप की नीति आने के बाद क्रिप्टो इंडस्ट्री को लेकर नजरिया पूरी तरह से बदल गया है, लेकिन इसके बावजूद सांसद अब भी कुछ हद तक सतर्कता बरत रहे हैं।

सांसदों की क्रिप्टो को लेकर दोराय

प्रतिनिधि सभा के सांसदों ने दो अन्य क्रिप्टो विधेयक भी पारित किए और उन्हें सीनेट में विचार करने के लिए भेज दिया गया। एक विधेयक क्रिप्टो के लिए एक नियामक ढांचा तैयार करता है, जबकि दूसरा अमेरिका को केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा जारी करने से प्रतिबंधित करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह सतर्कता इस बात का संकेत है कि भले ही सरकारें क्रिप्टो को अपनाने की ओर बढ़ रही हैं, लेकिन वे इसके जोखिमों को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहतीं।

डिजिटल परिसंपत्ति अब केवल निवेश का विकल्प नहीं

क्रिप्टो का बढ़ता बाजार इस बात पर जोर देता है कि यह उद्योग अपने सट्टा और सीमांत मूल्यों से कितनी ऊंचाई पर आ गया है। यह उपलब्धि इस सेक्टर की तेजी से बढ़ती स्वीकार्यता और विकास को दर्शाती है। परिसंपत्ति प्रबंधकों की बढ़ती रुचि, नए एक्सचेंज-ट्रेडेड उत्पाद की शुरुआत और खुदरा से लेकर कॉर्पोरेट यूजर्स तक की व्यापक भागीदारी ने क्रिप्टो को मुख्यधारा के वित्तीय तंत्र का हिस्सा बना दिया है। डिजिटल परिसंपत्तियां अब केवल निवेश का एक विकल्प नहीं, बल्कि वैश्विक वित्तीय नीतियों और चर्चाओं तेजी से आकार दे रही हैं।

बिटकॉइन में आई थी 1.8 प्रतिशत की गिरावट

यह क्षेत्र पिछली बार 3.92 ट्रिलियन डॉलर के संयुक्त बाजार मूल्य पर कारोबार कर रहा था, क्योंकि बिटकॉइन, जो दुनिया की सबसे बड़ी क्रिप्टोकरेंसी है, वह 1.8% गिर गई थी। दूसरा सबसे बड़ा क्रिप्टो टोकन, ईथर, पिछली बार 4.5% बढ़ा था। पिछले तीन महीनों में यह दोगुने से भी ज्यादा बढ़ गया है।

बिटकॉइन ने इस हफ्ते छुआ रिकॉर्ड स्तर

बिटकॉइन ने इस हफ्ते की शुरुआत में 120,000 डॉलर का आंकड़ा पार कर एक रिकॉर्ड बनाया। ब्रोकरेज फर्म बर्नस्टीन का अनुमान है कि 2025 के अंत तक यह 200,000 डॉलर तक पहुंच सकता है। क्रिप्टो एक्सचेंज के शेयरों में अंतिम बार 1% की वृद्धि हुई। वहीं खुदरा व्यापार मंच, जो क्रिप्टो ट्रेडों का भी समर्थन करता है, उसमें 3% की वृद्धि हुई।

धर्म के नाम पर घोटाला! बांग्लादेश के 6 इस्लामिक बैंकों में हजारों करोड़ की धांधली का खुलासा

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में शेख हसीना का तख्तापलट होने के बाद से मोहम्मद यूनुस का देश उभरने का नाम नहीं ले रहा है। अब एक ऐसा मामला सामने आया है, जहां 6 इस्लामिक बैंकों में हजारों करोड़ की धांधली का खुलासा हुआ है। अंतरराष्ट्रीय ऑडिटर्स केपीएमजी और अर्न्स्ट एंड यंग की ओर से एसेट क्वालिटी से पता चला है कि बांग्लादेश में छह शरिया-आधारित बैंक कुप्रबंध का शिकार हैं। उनके नॉन-परफोर्मिंग लोन (एनपीएल) पहले की रिपोर्ट की तुलना में चार गुना अधिक बढ़ गए हैं।

एशियाई डेवलपमेंट बैंक के समर्थन से जनवरी में समीक्षाएं शुरू की गई थीं। जिन बैंकों का रिव्यू किया गया उनमें फर्स्ट सिक्योरिटी इस्लामी बैंक, सोशल इस्लामी बैंक, यूनियन बैंक, ग्लोबल इस्लामी बैंक, आईसीबी इस्लामिक बैंक और एक्जिम बैंक शामिल हैं। रिव्यू के दौरान पाया गया कि ये बैंक गहरे वित्तीय कुप्रबंधन के शिकार हैं और सालों से रेगुलेटर्स को संदिग्ध आंकड़े पेश कर रहे हैं।

इन तीन बैंकों में सबसे ज्यादा धांधली

पिछले साल सितंबर तक बैंकों के फाइनेंशियल स्टेटमेंट्स की जांच करने वाले फोरेंसिक ऑडिट आधिकारिक रिकॉर्ड से बिल्कुल अलग तस्वीर पेश करते हैं। जहां बांग्लादेश बैंक की रिपोर्ट में बताया गया था कि छह ऋणदाताओं के पास कुल मिलाकर 35,044 करोड़ टका का एनपीए था, वहीं अंतरराष्ट्रीय ऑडिटरों के आकलन के अनुसार यह आंकड़ा 147,595 करोड़ टका तक पहुंच गया है।

ये धांधली तीन बैंकों के लिए विशेष रूप से स्पष्ट है। फर्स्ट सिक्योरिटी इस्लामी बैंक का एनपीए अनुपात 96।37 प्रतिशत पाया गया, जो उसकी ओर से बताए गए 21।48 प्रतिशत से काफी ज्यादा है। इसी तरह, यूनियन बैंक का एनपीए अनुपात पहले बताए गए 44 प्रतिशत की तुलना में 97।80 प्रतिशत है और ग्लोबल इस्लामी बैंक का एनपीए अनुपात 27 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो गया है। रिव्यू के दौरान पूंजी की भारी कमी का भी पता चला। एसेट क्वालिटी रिव्यू (AQR) रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल सितंबर तक सभी छह बैंकों के लिए संयुक्त प्रावधान की कमी 115,672 करोड़ टका तक पहुंच गई थी।

AQR एक जरूरी कदम

बैंकिंग विशेषज्ञ तथा बैंक एशिया के पूर्व प्रबंध निदेशक मोहम्मद अरफान अली ने कहा कि इस्लामी बैंकों की वास्तविक स्थिति को उजागर करने के लिए AQR एक बहुत ही जरूर कदम था। इससे यह निर्धारित करने में मदद मिलेगी कि क्या बैंक स्वतंत्र रूप से काम करते रहेंगे या सरकार को पूंजीगत सहायता के साथ अस्थायी रूप से उनका अधिग्रहण करना होगा और बाद में उन्हें निजी स्वामित्व या अन्य निवेशकों को वापस सौंपना होगा।

अलास्का में कांपी धरती, आया 6 .2 तीव्रता का भूकंप, ताजिकिस्तान में भी लगे झटके

अलास्का। अलास्का और ताजिकिस्तान में आज तड़के भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के मुताबिक ताजिकिस्तान में 4.6 तीव्रता का भूकंप आया। बयान के अनुसार, भूकंप 23 किलोमीटर की उथली गहराई पर आया, जिससे यह आफ्टरशॉक के लिए अतिसंवेदनशील है। वहीं अलास्का में भी 6.2 तीव्रता का भूकंप आया। बयान के मुताबिक, भूकंप का केंद्र 48 किलोमीटर की गहराई में था।

सोमवार तड़के भारत के जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में भी रिक्टर पैमाने पर 3.1 तीव्रता का भूकंप आया। एनसीएस के अनुसार, भूकंप 10 किलोमीटर की गहराई पर आया। इस बीच, रविवार रात, अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सुबनसिरी जिले में रात 10:59 बजे 3.4 तीव्रता का एक और कम तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया। एनसीएस के बयान के अनुसार, भूकंप की गहराई 5 किमी थी।

उथले भूकंप आमतौर पर गहरे भूकंपों की तुलना में अधिक खतरनाक होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उथले भूकंपों से भूकंपीय तरंगों की सतह तक यात्रा करने की दूरी कम होती है, जिसकी वजह से मजबूत जमीन हिलती है और संभावित रूप से इमारतों को अधिक नुकसान होता है।

इससे पहले, नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के एक बयान में कहा गया था कि रविवार को ताजिकिस्तान में 4.0 तीव्रता का भूकंप आया। बयान के अनुसार, भूकंप का केंद्र 160 किमी की गहराई में था। वहीं18 जुलाई को भी 10 किलोमीटर की गहराई पर 3।8 तीव्रता का भूकंप आया था। जबकि 12 जुलाई को, इस क्षेत्र में दो भूकंप आए। रिक्टर स्केल पर जिसकी तीव्रता 4.8 और 4.2 मापी गई।

ताजिकिस्तान एक पर्वतीय देश है और जलवायु संबंधी खतरों के लिए संवेदनशील है। यह भूकंप, बाढ़, सूखा, हिमस्खलन, भूस्खलन और भूस्खलन से ग्रस्त है। सबसे संवेदनशील क्षेत्र ग्लेशियर पर निर्भर नदी घाटियां हैं जो सिंचाई के लिए जलविद्युत और जल संसाधन प्रदान करती हैं। एनसीएस के एक बयान में कहा गया है कि आज अलास्का में 6.2 तीव्रता का भूकंप आया। यह आफ्टरशॉक के लिए अतिसंवेदनशील है। इससे पहले 17 जुलाई को, रिक्टर पैमाने पर 7.3 तीव्रता के भूकंप ने अलास्का को हिला दिया था। एनसीएस के अनुसार, बड़े पैमाने पर भूकंप 36 किमी की उथली गहराई पर आया था, जिससे यह आफ्टरशॉक्स के लिए अतिसंवेदनशील हो गया था।

पागलों की तरह कर रहे हमला... आखिर क्यों नेतन्याहू पर भड़का हुआ है अमेरिका, ट्रंप भी नहीं हैं खुश

वॉशिंगटन, एजेंसी। इजरायल की तरफ से हाल ही में सीरिया के राष्ट्रपति भवन पर हमला किया गया था। इस हमले में सीरिया के पांच सुरक्षा बलों के सदस्यों की मौत हो गई थी। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने इसी हमले का हवाला देते हुए कहा कि इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू एक मैड मैन की तरह काम कर रहे हैं। वह हर चीज पर बमबारी करते रहते हैं।

सीरिया की राजधानी दमिश्क में इजरायली हमले लगातार जारी हैं। इन्ही हमलों के बीच व्हाइट हाउस के अधिकारी ने बताया कि इससे पहले भी इजरायल ने दक्षिण में सरकारी बलों पर भी हमला किया गया। इजरायल ने गाजा पट्टी के एकमात्र कैथोलिक चर्च, होली फैमिली कैथोलिक चर्च के परिसर पर भी हमला किया, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी और 10 से भी अधिक लोग घायल हो गए थे। दुनियाभर में कई नेताओं ने इजरायल की तरफ से किए गए इस हमले पर आपत्ति जताई थी। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने इजरायल की तरफ से किए गए सीरियाई राष्ट्रपति भवन पर हमले का हवाला देते हुए कहा कि इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू एक पागल की तरह काम कर रहे हैं और वह हर समय हर चीज पर बमबारी करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि इजरायल की तरफ से किए जा रहे इस तरह के हमलों से ट्रंप जो करने की कोशिश कर रहे हैं, उसमें रुकावट आ सकती है।

गाजा चर्च हमले के बाद ट्रंप ने मांगा था स्पष्टीकरण

व्हाइट हाउस के एक अन्य अधिकारी ने बताया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गाजा चर्च पर हमले के बाद नेतन्याहू को फोन किया था और उनसे इस हमले का स्पष्टीकरण मांगा था। हालांकि नेतन्याहू का कहना था कि यह हमला गलती से हुआ था, इस चर्च पर हमला करने का उनका कोई उद्देश्य नहीं था। टैंक का एक गोला गलती से चर्च पर जा गिरा और यह हमला हो गया। साथ ही उन्होंने निर्दोष लोगों के मारे जाने पर भी अफसोस जताया। व्हाइट हाउस के एक अन्य अधिकारी ने बताया कि नेतन्याहू को लेकर ट्रंप प्रशासन के अंदर संदेह बढ़ रहा है, जिससे पता चलता है कि इजरायली प्रधानमंत्री बहुत ज्यादा चिड़चिड़े और व्यवस्था में दखल डालने वाले लग रहे हैं। हालांकि ट्रम्प प्रशासन के अधिकारियों की तरफ से की गई टिप्पणी के बारे में इजरायल के प्रवक्ता जिव एग्मोन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

इजराइल और अमेरिका के हमलों से नहीं डरा लेकिन इन 3 देशों की धमकी से घबरा गया ईरान, परमाणु पर बाचतीच के लिए तैयार

तेहरान। ईरान और इजराइल के बीच हुई जंग में बेंजामिन नेतन्याहू बैकफुट पर नजर आए, लेकिन अमेरिका की एंट्री के बाद ईरान को बड़ा नुकसान पहुंचा। इसके बावजूद ईरान इजराइल और अमेरिका से डरा नहीं, उसने आंख में आंख मिलाकर बात की है। इस बीच ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी की धमकी से वह जरूर डरता नजर आया है। यही वजह है कि परमाणु वार्ता करने के लिए राजी हो गया है। इस संबंध में ईरानी विदेश मंत्रालय ने आधिकारिक रूप से सोमवार को घोषणा कर दी है।

ईरान, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी शुक्रवार को इस्तांबुल में परमाणु वार्ता करेंगे। ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी तीनों यूरोपीय देशों ने चेतावनी दी है कि वार्ता फिर से शुरू न करने पर ईरान पर फिर से अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगाए जाएंगे। ईरानी सरकारी मीडिया

ने इस्माइल बघाई के हवाले से कहा, 'ईरान, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के बीच यह बैठक उप-विदेश मंत्री स्तर पर होगी।'

2015 में ईरान के साथ हुई थी एक डील

25 जुलाई के लिए निर्धारित वार्ता यूरोपीय देशों के विदेश मंत्रियों के अलावा, यूरोपीय संघ के विदेश नीति प्रमुख की ओर से गुरुवार को ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अरागची के साथ की गई पहली बातचीत के बाद हो रही है। ईरानी विदेश मंत्री से बातचीत एक महीने पहले इजराइल और अमेरिका की ओर से ईरानी परमाणु ठिकानों पर हमले के बाद की गई थी। वहीं, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी ये तीन यूरोपीय देश चीन और रूस के साथ मिलकर 2015 में ईरान के साथ किए गए एक न्यूक्लियर डील के हिस्सा हैं। हालांकि अमेरिका साल 2018 में इस डील से बाहर हो गया था। इस समझौते के तहत मध्य पूर्व देश पर लगे प्रतिबंध हटा लिए गए थे, बदले में ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर कुछ प्रतिबंध लगाए गए थे।

यूरोपीय देशों के पास कानूनी अधिकार नहीं- ईरान

इन तीनों देशों ने कहा है कि अगर इजराइल-ईरान हवाई युद्ध से पहले ईरान और अमेरिका के बीच चल रही परमाणु वार्ता फिर से शुरू नहीं होती है या ठोस नतीजे नहीं देती है, तो वे अगस्त के अंत तक 'स्नैपबैक मैकेनिज्म' के जरिए तेहरान पर संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों को बहाल कर देंगे। स्नैपबैक मैकेनिज्म 2015 के ईरान परमाणु समझौते (JCPOA) का एक हिस्सा है, जो संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों को फिर से लागू करने की एक प्रक्रिया है। हाल ही मेंअरागचीने कहा था कि अगर ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी कोई भूमिका निभाना चाहते हैं, तो उन्हें जिम्मेदारी से काम करना चाहिए और धमकी और दबाव की घिसी-पिटी नीतियों को जिसमें 'स्नैप-बैक' भी शामिल है, छोड़ देना चाहिए। इसके लिए उनके पास बिल्कुल भी नैतिक और कानूनी आधार नहीं है।

पाकिस्तान की साजिश पर भारी पड़ा पंजाब का एक्शन प्लान, भगवंत मान सरकार ने ड्रग तस्करों की कमर तोड़ी

नई दिल्ली, एजेंसी। पंजाब में पाकिस्तान की सरकार की साजिश को भगवंत मान सरकार ने नाकाम कर दिया है। पाकिस्तान अक्सर भारतीय सीमा में ड्रोन के ज़रिए नशा और हथियार भेजने की साजिशें करता रहा है। लेकिन पिछले कुछ सालों में पंजाब पुलिस ने ड्रोन से नशा भेजने के नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया है। अब सीमा पार से आने वाले ड्रोन की तादाद लगातार कम हो रही है। ड्रोन के ज़रिए नशे की तस्करी को पूरी तरह ख़त्म करने के लिए पंजाब पुलिस एंटी-ड्रोन तकनीक भी तैनात कर रही है।

रिकार्ड के मुताबिक साल 2019 में 2, 2020 में 7, 2021 में 1 ड्रोन पकड़े गए थे लेकिन 2022 में मान सरकार के आने के बाद ड्रोन पकड़ने की संख्या में जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई, 2022 में 28, 2023 में 121, 2024 में रिकॉर्ड 294 और 2025 में 15 जुलाई तक 138 ड्रोन जब्त किए गए।

साल 2022 से लेकर 15 जुलाई 2025 तक कुल 591 ड्रोन पंजाब पुलिस ने जब्त किए। इसी दौरान पंजाब पुलिस ने युद्ध नशे विरुद्ध अभियान के तहत 22 हजार से ज़्यादा नशा तस्करों को गिरफ्तार किया। ये आंकड़े सरकार की सख्त कार्रवाई की गवाही देते हैं। ड्रोन, नशा, हथियार और तस्करों पर एक साथ रोक लगाने का यह पूरा फ्रेमवर्क बताता है कि मान सरकार न केवल सुरक्षा में चौकस है, बल्कि नशे और तस्करी के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस का स्पष्ट संदेश दे रही है।

मान सरकार का कहना है कि अब सीमापार तस्करों की एक नहीं चलेगी। 932 किलो से ज़्यादा हेरोइन, 263 पिस्तौल, 14 AK-47 राइफल, 66 हैंड ग्रेनेड और करीब 15 किलो RDX बरामद किया गया है। इससे पहले किसी भी सरकार ने इतने बड़े नेटवर्क का ऐसा पर्दाफाश नहीं किया था। यह पहली बार हुआ है कि मान सरकार ने सीमाओं से लेकर गांवों तक एक ऐसा सुरक्षा जाल बिछाया है जहां नशा तस्करों और आतंकियों की भी एक नहीं चल पा रही है।

एंटी ड्रोन सिस्टम ने किया कमाल

इसका पूरा श्रेय जाता है एंटी ड्रोन सिस्टम को, जो पंजाब सरकार का एक अनोखा और प्रभावशाली मॉडल बन चुका है। किसी दूसरे राज्य में ऐसा मॉडल आज भी नहीं है। 596 सीमावर्ती गांवों में स्थानीय लोगों, रिटायर्ड सैनिकों और पुलिसकर्मियों को मिलाकर एक ऐसा सिस्टम तैयार किया गया है जो रात-दिन सीमा की निगरानी करता है। कोई भी संदिग्ध गतिविधि अब बर्दाश्त नहीं की जाती है। सूचना तुरंत पहुंचती है और कार्रवाई तुरंत होती है।

हर गांव को तीन श्रेणियों में बांटकर उनके रोड नेटवर्क, संदिग्ध लोगों की सूची और सुरक्षा जरूरतों के हिसाब से डिजिटल डाटा तैयार किया गया है, ताकि हर छोटी से छोटी हरकत पर भी नजर रखी जा सके। पुलिस ऑफिसर अब बीट बुक के ज़रिए हर गतिविधि का रिकॉर्ड रखते हैं और सभी रक्षक टीमों को व्हाट्सएप के ज़रिए जोड़ा गया है। यानी अब सुरक्षा सिर्फ पुलिस थानों तक सीमित नहीं रही, बल्कि गांव-गांव में मौजूद है।

BSF और पंजाब पुलिस की कार्रवाई

इतना ही नहीं, पंजाब सरकार 51 करोड़ की लागत से अब 9 अत्याधुनिक एंटी-ड्रोन सिस्टम खरीदकर सीमा पर तैनात कर रही है। BSF और पंजाब पुलिस मिलकर टेक्नोलॉजी, फोरेंसिक जांच और संचार विश्लेषण के ज़रिए हर ड्रोन का हिसाब रख रही है।आज गुरदासपुर, अमृतसर, तरनतारन, फिरोजपुर और फाजिल्का जैसे जिले, जो कभी ड्रोन तस्करी के लिए बदनाम थे, अब सुरक्षा व्यवस्था की मिसाल बन चुके हैं। खेमकरण, खलड़ा, अजनाला जैसे गांव अब सिर्फ खबरों में नहीं, देश की सुरक्षा रणनीति में चर्चा का विषय बन चुके हैं।

पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार ने साफ कर दिया है कि ड्रोन, नशा, आतंक या तस्करी किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। यह केवल राज्य की नहीं, देश की सुरक्षा का सवाल है। यह नया पंजाब है, चौकस, संगठित और समझदार। यहां अब नशा नहीं, सुरक्षा की रणनीति उड़ान भर रही है। पंजाब सरकार की यही पहल न सिर्फ राज्य की सुरक्षा के लिए, बल्कि पूरे देश की सीमाओं को सुरक्षित रखने की दिशा में एक मिसाल बन रही है।

12 बेकसूर मुसलमानों को 18 साल जेल में रखा, किसी के पिता मर गए किसी की पत्नी ..मुंबई ट्रेन ब्लास्ट के फैसले पर बोले ओवैसी

नई दिल्ली, एजेंसी। 2006 के मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट मामले में हाईकोर्ट ने सभी 12 दोषियों की सजा को रद्द कर दिया। AIMIM प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने सरकार से सवाल करते हुए कहा कि क्या सरकार इस मामले की जांच करने वाले महाराष्ट्र एटीएस के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करेगी? जिनकी वजह से निर्दोष लोगों को जेल भेज दिया गया और सालों बाद जब वह अपने जीवन का सुनहरा समय बीता चुके हैं, तब उन्हें जेल से रिहा किया जाता है।

दरअसल, 2006 के मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट मामले में पहले वहां की निचली अदालत ने सभी 12 दोषियों को दोषी करार दिया था, जिनमें से 5 को फांसी और 7 को उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी। लेकिन सोमवार को हाईकोर्ट ने अपने फैसले में सभी दोषियों को निर्दोष बताकर उन्हें बरी कर दिया। सजा पाए 12 आरोपियों में से एक आरोपी की 2022 में कोविड की वजह से जेल में ही मौत हो गई थी।

निर्दोषों को भेज दिया जाता है जेल

ओवैसी ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोस्ट साझा करते हुए लिखा कि निर्दोष लोगों को जेल भेज दिया जाता है और फिर सालों बाद जब वे जेल से रिहा होते हैं, तो उनके जीवन को फिर से बनाने की कोई संभावना नहीं होती। पिछले 17 सालों से ये आरोपी जेल में हैं। वे एक दिन के लिए भी जेल से बाहर नहीं निकले। उन्होंने कहा कि उनके जीवन का ज्यादातर सुनहरा दौर बीत चुका है।

पुलिस मीडिया की तरह करता है काम

ओवैसी ने कहा कि ऐसे मामलों जिनमें जनाक्रोश होता है, पुलिस का हमेशा यही रवैया रहता है। वह पहले दोषी मान लेते है और फिर उससे पीछे हट जाते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में पुलिस अधिकारी प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हैं, और जिस तरह से मीडिया मामले को कवर करता है, उसी तरह से व्यक्ति के अपराध का फैसला करता है। ओवैसी ने कहा कि जांच एजेंसियों ने ऐसे कई आतंकी मामलों में हमें बुरी तरह निराश किया है।

12 मुस्लिम 18 साल से जेल की कैद में

ओवैसी ने बताया कि 12 मुस्लिम पुरुष 18 साल से जेल में हैं, वो भी एक ऐसे अपराध के लिए जो उन्होंने किया ही नहीं है। उनका सुनहरा जीवन जेल में ही बर्बाद हो गया। उन्होंने कहा कि मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट में जान गंवाने वाले 180 परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया और न जाने कितने घायल हुए। लेकिन उन्हें अभी तक कोई न्याय नहीं मिला।

निर्दोषों ने खोए अपने परिजन

AIMIM प्रमुख ने बताया कि दोषी करार 12 लोगों कईयों ने अपने करीबियों को खो दिया। ओवैसी ने बताया कि फैसल और मुजम्मिल दोनों सगे भाइयों को उम्रकैद की सजा मिली थी। जिसकी खबर सुनकर उनके पिता को हार्ट अटैक आ गया और उनकी मौत हो गई। 2023 में उनकी मां की भी मौत हो गई। उन्होंने कहा कि मोहम्मद माजिद बरी की पत्नी की अपने पति से अंतिम बातचीत किए बिना ही मौत हो गई। बता दें कि 2006 में मुंबई की लोकल ट्रेन में 7 जगह धमाके बम धमाके किए गए थे। इस हादसे में 189 लोगों की जान गई थी।

रश्मिका ने मां को किया वीडियो कॉल, इमोशनल होकर एक्ट्रेस ने कहा- 'मैं कुछ इंपॉर्टेंट करने...'

रश्मिका मंदाना सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। फैंस से अपनी जिंदगी की छोटी-बड़ी बातें साझा करती हैं। हाल ही में साउथ की इस पॉपुलर एक्ट्रेस ने एक वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया। इस वीडियो में वह अपनी मां से बात कर रही हैं। साथ ही एक बड़ी जानकारी भी मां को बता रही हैं। आखिर अपनी जिंदगी को लेकर क्या फैसला लेने वाली हैं रश्मिका मंदाना? जानिए।

एक्ट्रेस ने मां को बता दी ये जरूरी बात

इंस्टाग्राम पर साझा की गई वीडियो में रश्मिका मंदान कहती हैं, 'आज मैं कुछ इंपॉर्टेंट करने वाली हूं, एक खास काम की शूटिंग करने वाली हूं। मैं उस बिजनेस की शुरुआत करनी वाली हूं, जिसके बारे में आपसे कहा था।' इस पर रश्मिका की मां कहती हैं, 'तुम अच्छा करोगी, तो अच्छा ही तुम्हारे साथ होगा।' इसके बाद रश्मिका अपनी मां को शुक्रिया कहती है। इस बातचीत के दौरान दोनों इमोशनल नजर आते हैं।

यूजर्स ने रश्मिका के वीडियो पर दिया रिएक्शन

रश्मिका मंदाना के इस इमोशनल वीडियो को फैंस ने भी पसंद किया है। कई यूजर्स ने एक्ट्रेस की वीडियो पर रिएक्शन भी दिए हैं। एक यूजर ने लिखा, 'मुझे पता था कि ये एक बिजनेस है। लेकिन इस सफर में आपकी मां का रोन बहुत ही अहम है। उनकी बातें आपको मजबूती देती हैं। मैं आपके लिए काफी खुश हूं। एक अन्य यूजर ने लिखा, 'मां हमेशा बहुत प्यार, सपोर्ट और केयर देती है।' रश्मिका के एक फैन ने कमेंट किया, 'आपका और मां के बीच का प्यार अमोल है।'

देवरकोंडा के साथ जुड़ता है रश्मिका का नाम

बताते चलें कि इन दिनों रश्मिका मंदाना का नाम साउथ के एक्टर विजय देवरकोंडा के साथ जोड़ा जा रहा है। करियर फ्रंट की बात करें तो वह जल्द ही दो फिल्मों में नजर आएंगी। एक फिल्म विजय देवरकोंडा के साथ 'गर्लफ्रेंड' है। वहीं एक बॉलीवुड फिल्म 'थामा' भी वह कर रही हैं।

सोनू सूद की सोसाइटी में निकला सांप, अभिनेता ने बताया कैसे पकड़ें? नेटिजन बोले- 'खतरों के खिलाड़ी'

बरसात का मौसम है। ऐसे में सांप-कीड़ों का खतरा बढ़ जाता है। सावधानी के साथ बचाव करना बहुत जरूरी है। अभिनेता सोनू सूद ने कुछ इसी तरह का सुझाव देते हुए एक वीडियो शेयर किया है। दरअसल, एक्टर की सोसाइटी में सांप निकल आया है। उन्होंने इसे सावधानीपूर्वक पकड़कर कहीं दूर छोड़ा।

सोनू सूद ने बताए सुरक्षा के उपाय

सोनू सूद ने आज शनिवार 19 जुलाई को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। इसमें वे एक सांप को पकड़ते हैं। फिर उसे तकिए के लिहाफ में डालते हैं। ऐसा करते हुए वे लोगों को यह सलाह देते हैं कि कि सोसाइटी या घर में सांप निकल आए तो कैसे रेस्क्यू करना चाहिए।

एक्टर बोले- 'प्रोफेशनल्स की मदद लें'

वीडियो में सोनू सूद कह रहे हैं, 'यह सांप हमारी सोसाइटी में आ गया। अगर आपकी सोसाइटी में इस तरह कोई सांप आता है तो प्रोफेशनल को जरूर बुलाएं। इस दौरान सावधानी बरतें'। सोनू सूद सांप को तकिए के लिहाफ में रखते हुए कहते हैं, 'आप यह ट्राई न करें। आप प्रोफेशनल्स की मदद लें'।

नेटिजन्स बोले- 'खतरों के खिलाड़ी हो आप'

सोनू सूद ने यह वीडियो शेयर करते हुए लिखा है, 'हर हर महादेव'। अभिनेता के इस पोस्ट पर यूजर्स के दिलचस्प कमेंट्स आ रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'आपको खतरों के खिलाड़ी में जाना चाहिए'। एक यूजर ने लिखा, 'सर तो लगते ही जांबाज चेहरे से मासूम पर दिल से खतरों के खिलाड़ी, फतेह कराते हर वो खेल जिसकी शुरुआत हो जिंदगी ने बिगाड़ी'। एक यूजर ने लिखा, 'पूरे बॉलीवुड में आप जैसा कोई नहीं'। सोनू सूद के वर्क फ्रंट की बात करें तो इस साल जनवरी में उनकी फिल्म 'फतेह' रिलीज हुई। इस फिल्म के जरिए उन्होंने निर्देशन में डेब्यू किया।

एंजेलिना जोली की बेटी ने पार्टनर के साथ रहने के लिए छोड़ा घर, एक्ट्रेस की बढ़ गई टेंशन

हॉलीवुड की कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार एंजेलिना जोली अपनी बेटी को लेकर इस वक्त परेशान हैं। हाल ही में बेटी ने उनका घर छोड़कर अपनी गर्लफ्रेंड डांसर केओनी रोज के साथ रहना शुरू कर दिया है। इस बात से एंजेलिना जोली नाराज हैं।

रडार ऑनलाइन की एक रिपोर्ट्स के मुताबिक एंजेलिना जोली अपनी बेटी के इस फैसले से खुश नहीं है। कहा जा रहा है कि एंजेलिना की बेट शिलोह पिछले कुछ हफ्तों से अपनी गर्लफ्रेंड के साथ रह रही है। दरअसल, एंजेलिना चाहती हैं कि बच्चे उनके साथ ही रहें। वह चाहती हैं कि उनके बच्चे एक सुरक्षित माहौल में रहें।

ब्रैड पिट को भी है नाराजगी

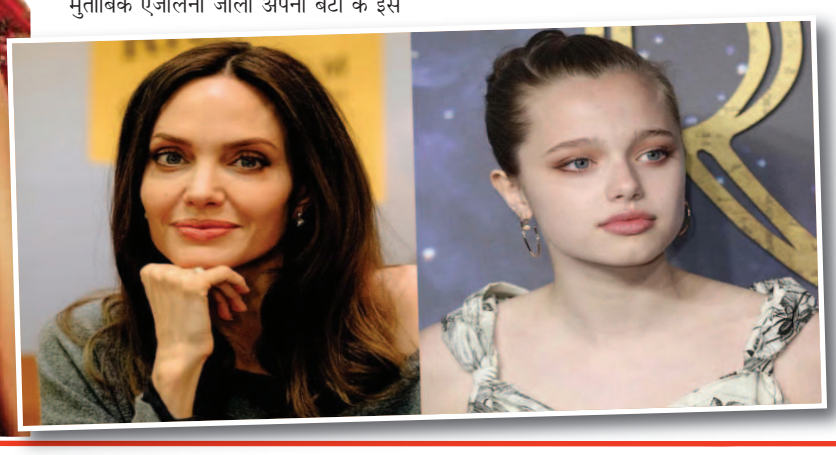

एंजेलिना जोली और ब्रैड पिट ने छह बच्चे हैं। मैडॉक्स, पैक्स, जहरा, शिलोह और दो जुड़वां बच्चे नॉक्स और विविएन हैं। कई साल पहले ब्रैड पिट और एंजेलिना जोशी का तलाक हुआ। सभी बच्चे एंजेलिना के साथ रहते हैं। कुछ हॉलीवुड मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार शिलोह का गर्लफ्रेंड के साथ रहना ब्रैड पिट को भी रास नहीं आ रहा है। वह भी बेटी को लेकर टेंशन में हैं। मगर इस इसके लिए बहुत हद तक एंजेलिना को जिम्मेदार मानते हैं।

पिछले साल शुरू हुआ एंजेलिना की बेटी का अफेयर

पिछले साल नवंबर में शिलोह और केओनी रोज को साथ देखा गया था, तभी से इनके रिलेशनशिप को लेकर अटकलें लगनी लगीं। दोनों को साथ में कई मौकों पर बाद में भी देखा गया। अब ये दोनों साथ रहने लगी हैं। इससे इनका अफेयर कंफर्म हो गया है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com